RNI No. UPHIN/2000/03766 ISSN No. 2581-3528 | ₹ : 20

केशव संवाद

(जनवरी–2025)

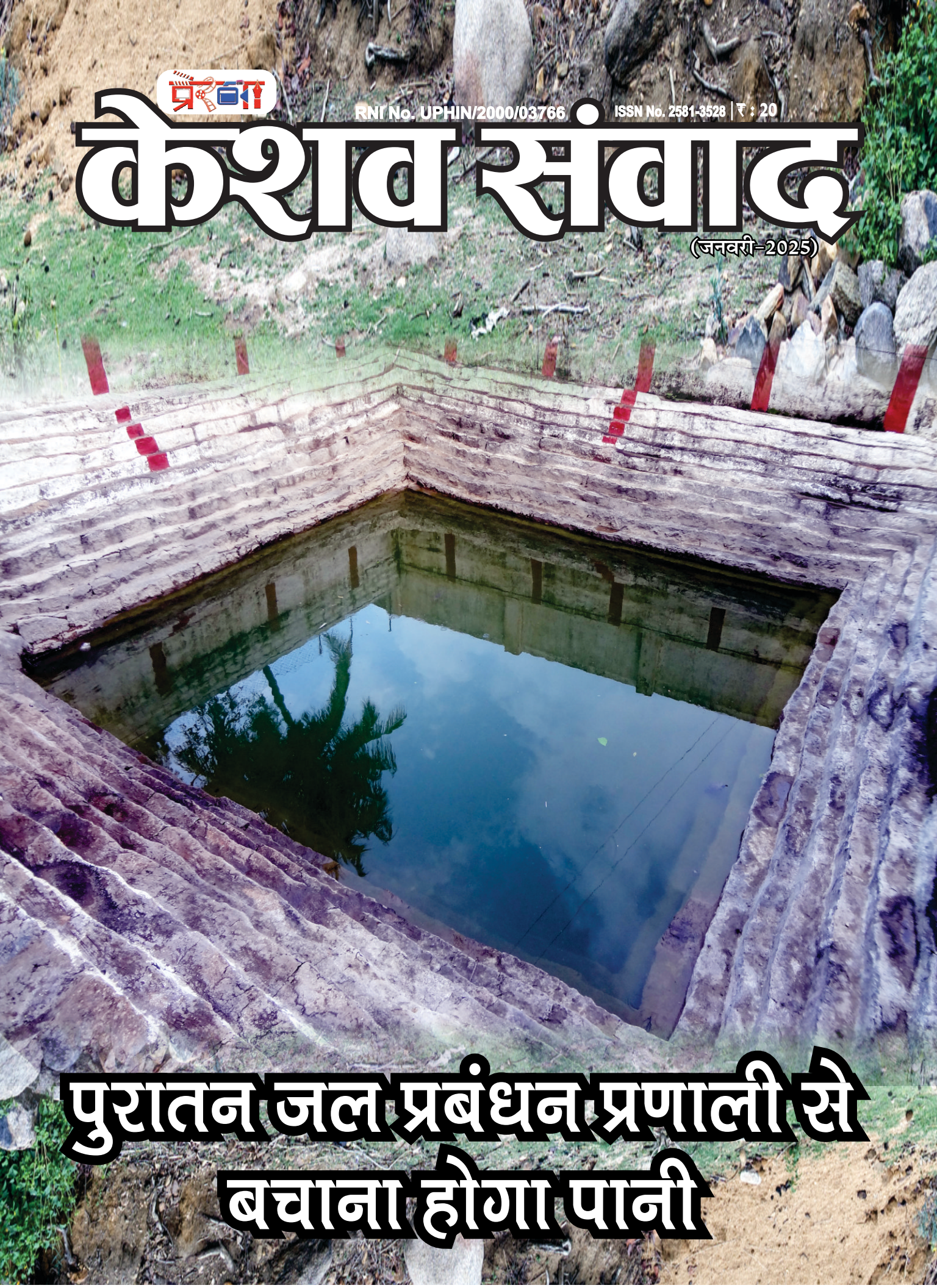

पुरातन जल प्रबंधन प्रणाली से बचाना होगा पानी

हिन्दी पंचांग जनवरी–2025

JANUARY - 2025   पौष-माघ शक-1946   जनवरी - 2025

रविवार SUNDAY	सोमवार MONDAY	मंगलवार TUESDAY	बुधवार WEDNESDAY	गुरुवार THURSDAY	शुक्रवार FRIDAY	शनिवार SATURDAY
एकादशी पूर्णिमा संकष्ट चतुर्थी अमावास्या			पौष शु.2 **1** ख्रिस्ती इ.स. 2025 प्रारंभ चंद्रदर्शन	पौष शु.3 **2** मुस्लिम रजब मासारंभ	पौष शु.4 **3** विनायक चतुर्थी, महिला मुक्ति दिन सावित्रीबाई फुले जयंती पंचक प्रारंभ 10.47	पौष शु.5 **4** पंचक
पौष शु.6 **5** पंचक	पौष शु.7 **6** गुरु गोविंद सिंह जयंती पंचक	पौष शु.8 **7** दुर्गाष्टमी शाकंभरी देवी नवरात्रोत्सवारंभ पंचक समाप्ति 17.49	पौष शु.9 **8**	पौष शु.10 **9** शांबदशमी (उड़ीसा) सूर्यपूजा (उड़ीसा)	पौष शु.11 **10** पुत्रदा एकादशी वैकुंठ एकादशी (द.भा)	पौष शु.13 BANK HOLIDAY **11** शनि प्रदोष
पौष शु.14 **12** स्वामी विवेकानंद जयंती पारसी शेहरेवार मासारंभ राष्ट्रीय युवा दिन	पौष शु.15 पौष पूर्णिमा **13** शाकंभरी देवी नवरात्र समाप्ति, माघ स्नानारंभ पुष्याभिषेक यात्रा, धनुर्मास समाप्ति, लोहरी (कश्मीर) भोगी (द.भा.), पूर्णिमा प्रारंभ सुबह 05.02 शाकंभरी पूर्णिमा, पूर्णिमा समाप्ति उ.रात्रि 03.56	माघ कृ.1 **14** मकरस्नान (संक्रमण पुण्यकाल सुबह 08.54 से शाम 04.54 तक), माघ बिहू (असम) हज़रत अली जन्म दिन, माघ स्नानारंभ, तै-पोंगल (केरल)	माघ कृ.2 **15** संक्रांत करिदिन माट्टु पोंगल (तामिलनाडु)	माघ कृ.3 **16** संकष्ट चतुर्थी, चंद्रोदय 09.32	माघ कृ.4 **17**	माघ कृ.5 **18**
माघ कृ.5 **19**	माघ कृ.6 **20**	माघ कृ.7 **21** कालाष्टमी स्वामी विवेकानंद जयंती (तिथि पूजा)	माघ कृ.8 **22**	माघ कृ.9 **23** नेताजी सुभाष जयंती	माघ कृ.10 **24**	माघ कृ.11 BANK HOLIDAY **25** षट्तिला एकादशी प्रदोष
माघ कृ.12 गणराज्य दिन **26**	माघ कृ.13 **27** शिवरात्री, सोम प्रदोष मेरु त्रयोदशी (जैन)	माघ कृ.14 **28** लाला लाजपतराय जयंती शबे मिराज अमावास्या प्रारंभ रात्रि 07.36	माघ कृ.30 माघ अमावास्या **29** दर्श अमावास्या, मौनी अमावास्या (जैन) त्रिवेणी अमावास्या (जैन) अमावास्या समाप्ति शाम 06.05	**30** चंद्रदर्शन, हुतात्मा दिन महात्मा गांधी पुण्यतिथि, माघ शुक्लादि पंचक प्रारंभ 18.35	**31** मुस्लिम शाबान मासारंभ पंचक	

जनवरी –2025 (व्रत-त्यौहार)

पौष पुत्रदा एकादशी
जनवरी 10, 2025, शुक्रवार
पौष, शुक्ल एकादशी

पौष पूर्णिमा
जनवरी 13, 2025, सोमवार
पौष, शुक्ल पूर्णिमा

मकर संक्रान्ति
जनवरी 14, 2025, मंगलवार
सूर्य का धनु से मकर राशि में प्रवेश

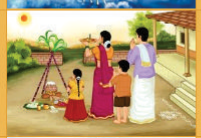

पोंगल
जनवरी 14, 2025, मंगलवार
मकर संक्रान्ति के दिन

सकट चौथ
जनवरी 17, 2025, शुक्रवार
माघ, कृष्ण चतुर्थी

षटतिला एकादशी
जनवरी 25, 2025, शनिवार
माघ, कृष्ण एकादशी

मौनी अमावस
जनवरी 29, 2025, बुधवार
माघ, कृष्ण अमावस्या

केशव संवाद

RNI No. UPHIN/2000/03766

ISSN No. 2581-3528

जनवरी, 2025
वर्ष : 25 अंक : 01

प्रबंध निदेशक
अणंज कुमार त्यागी

संपादक
कृपाशंकर

कार्यकारी संपादक
डॉ. नीलम कुमारी

पृष्ठ संयोजन
वीरेंद्र पोखरियाल

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा -201309
फोन न. 0120 4565851
ईमेल : keshavsamvad@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

स्वामी पंकज कुमार की ओर से मुद्रक/प्रकाशक रमन चावला द्वारा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा.लि. नोएडा से मुद्रित तथा केशव भवन 105 आर्यनगर सूरजकुंड रोड मेरठ से प्रकाशित

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा मेरठ की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा। संपादक

विषय सूची

भारतीय संस्कृति में समरसता के संगम का प्रतीक है महाकुम्भ -अरुण कुमार.....05

पुरखों की जल प्रबंधन प्रणाली को संरक्षित रखना हमारा दायित्व- उमाशंकर पाण्डेय...06

पर्यावरण संरक्षण की अद्भुत मिसाल है बुंदेलखंड का जलग्राम - डॉ. दीपा रानी.....08

संस्कारों की प्रथम पाठशाला : परिवार - सूर्यप्रकाश टोंक...10

भारत के स्वभाव में निहित है समरसता -मंजुल पालीवाल.....12

नेकी का डिब्बा : इंसानियत जिंदा है - मानस वर्मा.....14

नागरिक कर्तव्यों का बोध कराता आँचल वेलफेयर फाउंडेशन - डॉ. दीपा रानी.....15

हेलमेट मैन की कहानी स्वयं उनकी जुबानी - धीरज त्रिपाठी.....16

परोपकार के भाव से संपोषित भारत की दान परम्परा - प्रहलाद सबनानी.....18

आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर भारत की अंतरिक्ष में लम्बी... - मृत्युंजय दीक्षित.....20

अनोखा कुटुंब : महेन्द्र रावल जी का परिवार - डॉ. शिवा शर्मा.....22

जन्मदिवस विशेष - स्वामी विवेकानन्द -डेस्क.....22

पाठकगण पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से ई-मेल (keshavsamvad@gmail.com) के माध्यम से भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

ISSN No. 2581-3528

संपादकीय.....

संस्कृति और कर्तव्य बोध से लिखेंगे, प्रगतिपथ पर बढ़ते नये भारत की गाथा...

'महाकुंभे यः स्नात्वा धर्मेण समन्वितः। यस्तु कृत्वा तु कुम्भं तं दृष्ट्वा सदा मोक्षदः॥'

स्कंद पुराण में वर्णित तीर्थराज प्रयाग में लगने वाला महाकुम्भ सामाजिक समरसता का सबसे बड़ा एवं अद्भुत उदाहरण है। समुद्र मंथन से निकले अमृत कलश की अमृत बूंद से निर्मित पवित्र त्रिवेणी के संगम में विभिन्न वर्गों, जाति, मत, पंथ और संप्रदाय के लोग सामाजिक, धार्मिक भेदभाव से रहित एकजुट होकर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता के साथ-साथ शांति-सौहार्द का संदेश देते हैं। ऐसा सामाजिक समागम सम्पूर्ण विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलता। वस्तुतः सामाजिक समरसता भारत के स्वभाव में ही निहित है जो कि सर्वधर्म समभाव के रूप में भारत के चैतन्य में बसी हुई है। श्री रामचरितमानस जी में संत प्रवर तुलसीदास जी ने लिखा है :-

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी॥
ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी॥

अर्थात् हे तात! यह अकथनीय कहानी सुनिए। यह न तो समझ में आती है और जिसका बखान भी नहीं किया जा सकता है। जीव ईश्वर का अंश है। अतएव वह अविनाशी, चेतन, निर्मल और स्वभाव से ही सुख की राशि है।

समुद्र मंथन से निकले अमृत कलश की अमृत बूंद से निर्मित पवित्र त्रिवेणी के संगम में विभिन्न वर्गों, जाति, मत, पंथ और संप्रदाय के लोग सामाजिक, धार्मिक भेदभाव से रहित एकजुट होकर सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता के साथ-साथ शांति-सौहार्द का संदेश देते हैं। ऐसा सामाजिक समागम सम्पूर्ण विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलता। वस्तुतः सामाजिक समरसता भारत के स्वभाव में ही निहित है जो कि सर्वधर्म समभाव के रूप में भारत के चैतन्य में बसी हुई है।

उक्त चौपाई में निहित पावन विचार सनातन भारतीय संस्कृति की पहचान है। भारतीय संस्कृति ही है जो प्रत्येक जीव में ईश्वर का अंश देखती है। ऐसे उच्च जीवन मूल्यों से युक्त अपनी भारतीय संस्कृति की एक अति महत्वपूर्ण परंपरा है जल संरक्षण। राजा भागीरथ, अनुसूइया, महाराजा भोज, महारानी अहिल्याबाई होलकर जैसे अनेक जल योद्धा हुए हैं जिन्होंने न केवल पतित पावनी माँ गंगा को अपने पूर्वजों को मोक्ष दिलाने के लिए अवतरित किया बल्कि उत्तम जल प्रबंधन कर जल की कमी से त्राहिमाम करती अपनी प्रजा को भी प्राणदान दिया।

पुरखों के द्वारा प्रदत्त जीवन मूल्यों और जल प्रबंधन जैसी उत्तम परम्पराओं का सजग होकर निर्वहन करना प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है। नागरिक कर्तव्यों का बोध कराने वाले भारत के संविधान को निर्मित हुए 75 वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि भारत का संविधान विश्व का सबसे बड़ा व अनूठा संविधान है। जिसमें न केवल नागरिकों के अधिकारों के बारे में बल्कि उनके मौलिक कर्तव्यों के विषय में भी विस्तार से बताया गया है। ऐसे ही मौलिक कर्तव्य निर्वहन की अनूठी मिसाल है हेलमेट मैन श्री राघवेंद्र जी जिन्होंने 22 राज्यों में 65,000 हेलमेट प्रदान कर सड़क दुर्घटना में हजारों लोगों की जान बचाई है। ऐसे जिम्मेदार नागरिकों के कारण ही भारत प्रगति पथ पर अग्रसर है।

इसके साथ ही एक नये युग में प्रवेश करता हुआ अपना देश विभिन्न क्षेत्रों में नया इतिहास लिख रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के नेतृत्व में देश अन्तरिक्ष के क्षेत्र में भी प्रगति पथ पर बढ़ते हुए आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर है। हम भी 13 जनवरी को प्रारंभ होने जा रहे ऐतिहासिक महाकुंभ को साक्षी मानते हुए संकल्प लें कि भारत को पर्यावरण मुक्त करते हुए अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करेंगे और अपने राष्ट्र के पुनर्निर्माण में अपना सकारात्मक योगदान देंगे ।

संपादक

ISSN No. 2581-3528

भारतीय संस्कृति में समरसता के संगम का प्रतीक है-महाकुम्भ

अरुण कुमार
आयुर्वेदाचार्य एवं फिजियोथेरेपिस्ट

महाकुम्भ अपने आप में पूर्णता को प्राप्त होता हुआ वैश्विक समरसता का एक अद्भुत संगम हैं। महाकुम्भ का उल्लेख भारतीय पुराणों तथा शास्त्रों में है जिससे यह प्रतीत होता हैं कि यह भारत की धार्मिक और सामाजिक संरचना का अभिन्न अंग हैं। शास्त्रों के अनुसार 'महाकुम्भ' शब्द का तात्पर्य अमृत कलश से है जिसमें देवों और असुरों के समुद्र मंथन का वर्णन मिलता है। कलश से छिटकी अमृत की छींटें जहां-जहां गिरी वहां-वहां 12-12 वर्षों के अंतराल पर ग्रहों, नक्षत्रों और तिथियों के अनुसार महाकुम्भ संगम का आयोजन होता है। यह प्रयागराज, उज्जैन, नासिक और हरिद्वार में आयोजित होता है जहां गंगा, यमुना, गोदावरी, शिप्रा, सरस्वती और संगम जैसी पवित्र नदियों में स्नान कर, श्रद्धालु अमृतशुद्धि तथा मोक्ष की कामना करते हैं। वेद ज्ञान के अनुसार कुम्भ एक वैदिक पर्व है जिसमें चारों वेदों के अनुसार चार विभिन्न स्थानों पर कुम्भ के मेलों का आयोजन होता है। तार्किक रूप से पौराणिक अवधारणा यह है कि कुम्भ के तीन प्रकार हैं। प्रदेश स्तर के विद्वानों द्वारा एकत्र होकर ज्ञान गंगा में सर्व समाज का स्नान करना अर्ध कुम्भ कहलाता हैं, राष्ट्रीय स्तर के विद्वानों का ज्ञान की त्रिवेणी संगम पर उनके विचारों में स्नान करना कुम्भ कहलाता हैं तथा विश्व स्तर के विद्वानों के अनेकों संस्कृतियों के अनंत ज्ञान के संगम में स्नान करने के अवसर को ही महाकुम्भ कहा गया है और यही अवधारणा कुम्भ के उद्देश्य को पूर्णता भी प्रदान करता है। इस अद्भुत संगम में आध्यात्मिकता, तपस्या, भक्ति तथा सनातन धर्म के सभी प्रतीक उपस्थित होते हैं। साधु, संत, आचार्य, ज्ञानी, ध्यानी, अखाड़े तथा अन्य धार्मिक प्रतिबिंब सामाजिक समरसता, विविधता तथा एकता का दर्शन देते हैं। आज की पीढ़ी के लिए यह सौभाग्य का विषय है कि कलयुग के प्रथम चरण के 2081 वें संवत् में भी भारत में इस सांस्कृतिक सभ्यता और परंपराओं के संगम को देखने का अवसर प्राप्त है ।

महाकुम्भ का आयोजन सामाजिक समरसता का अदभुत उदाहरण है जिसमें जाति,

धर्म, भाषा तथा वर्ग से परे सभी एक साथ एक भाव से इस पावन पर्व में सम्मिलित होते हैं। राजा हो या रंक, ज्ञानी हो या अज्ञानी सभी एक साथ एक ही जलधारा में समानता के भाव से स्नान करते हैं। इसे विश्व के सबसे बड़े मेले के रूप में देखा जाता है जिसमें करोड़ों श्रद्धालुगण, सैकड़ो पंथ, अनेकों क्षेत्र की सीमाओं को पार करते हुए स्नान में भाग लेते हैं। समरसता का यह अद्भुत संगम केवल आयोजन मात्र अथवा प्रतीक मात्र न होकर भारत की संपूर्ण संस्कृति का दर्पण है। समय-समय पर महर्षि दयानंद, स्वामी विवेकानंद, पंडित मदन मोहन मालवीय जैसे अनेक महापुरुषों व आध्यात्मिक गुरुओं ने भी कुम्भ को सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा और समाज सुधार के आंदोलन का केंद्र बनाया है। पौष पूर्णिमा के दिन आयोजित होने वाले महाकुम्भ के इस अनोखे संगम में विभिन्न प्रदेशों के संगीत, हस्तशिल्प और कलाओं को देखा जा सकता है जिसमें देश की सभी संस्कृतियों की बहुलता और विविधता दिखायी पड़ती है जो समरसता और सहिष्णुता का अद्भुत उदाहरण हैं। आधुनिकता और वैश्वीकरण के इस युग में विदेशी अतिथियों के आगमन से महाकुम्भ के इस आयोजन से सभी में भारतीय समरसता का प्रसार होता है जो न केवल पर्यटन को आकर्षित करता है बल्कि देश को भी गौरवान्वित करता है।

इस वर्ष महाकुम्भ का आयोजन उत्तर प्रदेश राज्य की प्रसिद्ध नगरी प्रयागराज में 13 जनवरी से प्रारंभ हो रहा है जिसमें करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु शामिल होने जा रहे हैं। प्रदेश की सरकार ने अपनी निगरानी में डिजिटल तकनीकी से परिपूर्ण व्यवस्था बनाई है ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार का कष्ट न हो सके। साथ ही प्रबंधन की ओर से सुरक्षा की अनुपम व्यवस्था की गयी है। पर्यावरण संरक्षण के लिए जनमानस के सहयोग की भी अपेक्षा की जा रही है ताकि सौहार्द का वातावरण बना रहे तथा संगम क्षेत्र में गंदगी न फैले। इस बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सम्पूर्ण प्रयागराज में तथा विशेष रूप से कुम्भ नगर क्षेत्र को पॉलीथीन मुक्त करने का अद्भुत अभियान चलाया है जिसमे स्वयंसेवक अपनी व्यस्ततम दिनचर्या से समय निकालकर इस अभियान को सफल बनाने का कार्य कर रहे हैं। विश्व के कोने-कोने से एकत्रित होकर त्रिवेणी के तट पर श्रद्धालुओं का जनसमूह एक ही समय में नदी में पवित्र डुबकी लगायेगा और प्रत्येक डुबकी के साथ 'हर हर गंगे' की पावन ध्वनि के साथ एकात्म भाव और समरसता का संचार करेगा। ■

आवरण कथा

पुरखों की जल प्रबंधन प्रणाली को संरक्षित रखना हमारा दायित्व

पद्मश्री उमा शंकर पाण्डेय
जल योद्धा

हमारे यहां श्रीमद्भागवत पुराण कथा होती है, उसमें कलश यात्रा होती है। हम सूर्य को प्रतिदिन अर्घ्य देते हैं। अतिथि को सम्मान के रूप में जल पिलाते हैं। हमारी परम्परा में हाथ में जल लेकर न्याय किया जाता था। नदियों के दर्शन कर हम भेंट देते हैं? जल का भारत की परम्परा में बड़ा महत्व है।

21 साल की उम्र में उस माँ के लिए भगत सिंह फांसी पर चढ़ जाते हैं। 24 वर्ष की उम्र में महारानी लक्ष्मीबाई माँ भारती के लिए बलिदान हो जाती हैं। 26 वर्ष में चन्द्रशेखर आजाद बलिदान हो जाते हैं। 28 वर्ष के मंगल पांडे आजादी के लिए पहली गोली चला कर क्रांति का शुभारंभ करते हैं। 'राष्ट्र हमें देता है सब कुछ हम भी तो कुछ देना सीखें' इस भाव को अंगीकृत करना होगा।

आज पूरी दुनिया में जल का संकट है, नवीन विज्ञान असफल हो गया है। हमारे पुरखों के जल संरक्षण के बेजोड़ तरीके थे। आप देखेंगे कि भारत में 2000 साल पुराना बाँध और तालाब हैं, कुंए बने हैं और वे आज भी भरे हुए हैं। छत्रपति शिवाजी महाराज के बनाए दुर्ग में जल प्रबंधन देखने को मिलता है। वर्षों से हमारे यहां जल विज्ञान था। हमारे वैद्य केवल नाड़ी देख कर शरीर की सैकड़ों बीमारियां को एक दवा से ठीक करते थे। पर्यावरण वैदिक शब्द नहीं है। हमें समय के अनुसार पर्यावरण शब्द को गढ़ने की आवश्यकता पड़ी। हम हजारों साल पुराना पानी पीते हैं जो भूमि में है। ये लाखों साल पुराना जल हमारे पुरखों ने संजो के रखा था। हरित क्रांति के नाम पर भूमि माता के पेट में अनगिनत छेद कर हम मशीन द्वारा 24 घंटे पानी निकाल रहे हैं। अनियंत्रित दोहन ठीक नहीं। दुनिया में हमारी आबादी 18 प्रतिशत है जबकि भूमि 5 प्रतिशत है, जल 4 प्रतिशत है, उसमें भी शुद्ध पानी मात्र 1 प्रतिशत है। हमारे पुरखे कितने जानकार थे? पर्यावरण के प्रति कितने सजग थे? धर्म के प्रति कितने सजग थे? हम तीर्थाटन करने जाते हैं, जल लाते हैं। हर घर में तीर्थ का जल होगा, पैसा नहीं होगा, कपड़े नहीं होंगे, घर नहीं होगा लेकिन तीर्थ से लाया हुआ जल हर घर में होता है। हमारे यहां श्रीमद्भागवत पुराण कथा होती है, उसमें भी कलश यात्रा होती है। हम सूर्य भगवान को प्रतिदिन अर्घ्य देते हैं। अतिथि को सम्मान के रूप में पानी पिलाते हैं। शरीर में सुस्ती हो तो नहा लेते हैं। हमारी परम्परा में हाथ में गंगाजल और तुलसी लेकर न्याय किया जाता था। कुंए, तालाब और नदियों की पूजा होती है। नदियों के दर्शन कर हम भेंट देते हैं? जल का भारत की परम्परा में बड़ा महत्व है। हमें पवित्र एवं उपयोगी जल का प्रबंधन करना होगा। खेत को, फसल को, परिवार को, जानवर को, पेड़ों को कितना

ISSN No. 2581-3528

पानी चाहिए उसका आकलन करना होगा। गांव में कितना दृश्य पानी है अदृश पानी कितना है? पौछा लगाने वाला पानी, सब्जी धोने वाला पानी, बर्तन धोने वाला पानी, गाड़ी धोने वाला पानी सब कितना खर्च होता है उसका हिसाब–किताब रखना होगा। उपयोग किये गये पानी की रिसाइक्लिंग कैसे हो सकती है? यूज को रियूज कैसे कर सकते हैं? पुनः उसका उपयोग कैसे कर सकते हैं? यह सोचना होगा।

आचार्य चाणक्य के समय में भी जल मंत्री हुआ करते थे। हमारे देश में पांच जल योद्धा पैदा हुए... पहले जल योद्धा महाराज भगीरथ जो गंगा मैया को लेकर आए। दूसरी जल योद्धा माता अनसुइया जो मंदाकिनी मैया को लेकर आईं। तीसरे जल योद्धा महाराज भोज जिन्होंने भोपाल में 65000 हेक्टेयर में दुनिया का सबसे बड़ा तालाब बनवाया। चौथी जल योद्धा महारानी दुर्गावती जिन्होंने गोंडवाना वनवासी क्षेत्र में हजारों तालाब बनवाए। पांचवीं जल योद्धा महारानी माता अहिल्याबाई होलकर जिन्होंने नर्मदा के तट एवं सभी तीर्थ स्थलों में तालाब बनवाए। भारत का अपना प्राच्य जल विज्ञान है। महाराज भोज का जल ग्रंथ 1200 पृष्ठों का है, जल से सम्बंधित ग्रंथ मेघ माला 1800 पृष्ठों का है। हमारे पुरखों का प्राच्य विज्ञान अनुपम था। एक किलो गेहूं उपजाने हेतु 1000 लीटर पानी लगता है, जब एक किलो शक्कर बनती है 2.5 लीटर पानी लगता है।

संघ के पंचम सरसंघचालक पूज्य सुदर्शन जी का आग्रह था कि घर आये अतिथि को आधा गिलास पानी दीजिये। जितना आवश्यकता उतना लीजिए। पानी बनाया नहीं जा सकता केवल बचाया जा सकता है। जल के प्रति ऐसा चिंतन हमें अपनाना होगा। हमें भारत के जल विज्ञान को समझना होगा, आज भी कुंए, तालाब और नदियों का कोई विकल्प नहीं है। हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है। हमारी पहचान गंगा से है। अगर गंगा नहीं है तो देश नहीं है, गंगा नहीं है तो सनातन नहीं है। माँ गंगा का अमृत रुपी जल भी प्रदूषित होने लगा है यह चिंतनीय है। उत्तर प्रदेश में आजादी के बाद 25 लाख तालाब थे, आज दो लाख भी नहीं हैं। पूज्य नाना जी देशमुख के सानिध्य में 500 गांवों में काम हुआ। आज यह बताते हुए प्रसन्नता है कि गनीमा के राजापुर क्षेत्र में जहां पूज्य गोस्वामी जी महाराज का जन्म हुआ है 5 लाख क्विंटल बासमती धान प्रति वर्ष बाहर आता है। लोग कहते थे भूखा बुंदेलखंड, प्यासा बुंदेलखंड लेकिन आज वहां असाधारण परिवर्तन हुआ है। पूज्य नाना जी देशमुख के प्रयासों और प्रेरणा से हजारों कार्यकर्ता बुंदेलखंड के गांवों में जुटे और परिणाम आया। उन्होंने कोई संस्था नहीं बनाई, कोई एन.जी.ओ. नहीं बनाया, कोई एक रुपये का अनुदान नहीं लिया। पूज्य नाना जी कहते थे कि आपको किसी राजनीतिक व्यक्ति से नहीं मिलना है, एक गांव में काम करना है और आगे बढ़ जाना है, आज जखनी मॉडल जो पूरे देश के लिए प्रयोग माना जाता है उसमें 10–50 जल ग्राम जखनी मॉडल पर हैं। 6000 करोड़ की भारत सरकार की अटल भूजल योजना भी जखनी मॉडल पर ही है। यह मॉडल पहले 470 ग्राम पंचायतों में लागू हुआ फिर एक लाख गांव में लगा फिर भारत सरकार ने कहा हर गांव बनेगा जल ग्राम। इस सृष्टि में और इस दुनिया में मातृभूमि के बाद माँ है और माँ से बड़ा कोई नहीं है, जो स्वयं गीले में सोती है सूखे में सुलाती है, जो स्वयं भूखा रहकर भोजन देती है।

पूज्य नाना जी देशमुख के प्रयासों और प्रेरणा से हजारों कार्यकर्ता बुंदेलखंड के गांवों में जल संरक्षण हेतु जुटे और परिणाम आया। उन्होंने कोई संस्था, कोई एन.जी.ओ. नहीं बनाया, कोई अनुदान नहीं लिया। वे कहते थे कि आपको किसी राजनीतिक व्यक्ति से नहीं मिलना है, एक गांव में काम करना है और आगे बढ़ जाना है।

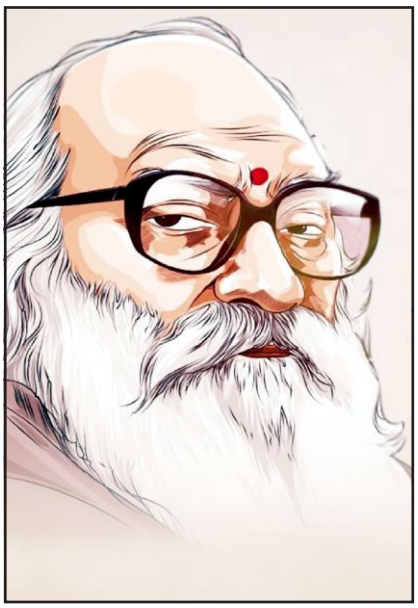

जिस पिता के तन पर कपड़े नहीं होते वह आपके लिए काम करता है। माता और पिता की बात मानकर एक क्षत्रिय कुल में पैदा हुआ राजकुमार 14 साल बाद भगवान बनकर लौटता है यह पिता का आशीर्वाद है। एक देवता जिसका सर अलग है धड़ अलग है और माता–पिता की परिक्रमा करता है श्रीगणेश हो जाता है। इसलिए माँ की सेवा करिए, पिता की सेवा करिए, पृथ्वी की सेवा करिए और राष्ट्र जो राष्ट्र पुरुष है उसकी सेवा कीजिये। एक छोटी सी कथा है, एक जंगल में आग लग गई थी सारे जानवर भाग रहे थे, एक चिड़िया अपनी चोंच से पानी लाकर आग में डाल रही थी। हाथी ने पूछा कि चिड़िया बहन क्या तुम्हारी चोंच के एक बूंद पानी से आग बुझ जाएगी, चिड़िया ने कहा, हाथी भैया मैं नहीं जानती कि मेरी चोंच के पानी से आग बुझेगी कि नहीं बुझेगी लेकिन इतिहास में मेरा नाम आग से डरकर भागने वालों में नहीं आग बुझाने वालों में लिखा जाएगा। चिड़िया ने आगे कहा, तुम्हारी बड़ी सूंड में बहुत ज्यादा पानी आता है यदि तुम भी मेरे साथ पानी आग में डालो और सभी जानवर भी पानी डालें तो आग बुझ जाएगी। सारे जानवरों ने ऐसा ही प्रयास किया और जंगल की आग बुझ गई। ऐसे ही छोटे–छोटे प्रयास हम सबको मिलकर करने होंगे। ■

ISSN No. 2581-3528

पर्यावरण संरक्षण की अद्भुत मिसाल है बुंदेलखंड का जलग्राम

एक वक्त था जब प्रदेश के अन्य स्थानों की तरह जखनी गांव भी त्रस्त था। नदी, नाले सूखे पड़े थे। इस गांव में बोरिंग तक कामयाब नहीं हो पाती थी। वहीं आज इस गांव के नागरिकों और जलयोद्धा उमाशंकर जी के अथक प्रयासों की वजह से यहां 6 तालाब, 20 कुंए और दो नालों में पूरे साल पर्याप्त पानी भरा रहता है। मई जून की भीषण गर्मी में भी इस गांव के कुंओं और जलाशयों में 10 से 15 फीट पानी रहता है।

डॉ. दीपा रानी
पोस्ट डॉक्टरल शोधार्थी

धरती का पूर्ण अस्तित्व उसके पर्यावरण से निर्मित है। यह जितना शुद्ध और संतुलित होगा पृथ्वी की आयु उतनी ही अधिक बढ़ेगी। परंतु पिछले कुछ दशकों में अत्याधुनिक संसाधनों के निर्माण की वजह से बढ़ते प्रदूषण ने पर्यावरण के घटकों को बहुत हानि पहुंचाई है। जिस वजह से जल और वायु अधिक मात्रा में प्रदूषित हुए हैं। शुद्ध जल के प्राकृतिक स्रोत नष्ट होते जा रहे हैं। यह धरती के संपूर्ण जीवों के लिए संकट की स्थिति है। दुनियाभर में इस संकट से निपटने के लिए अनेक मुहिम चलाई जा रही हैं। अभी हाल ही में भारत में आयोजित जी–20 सम्मेलन में भी इस मुद्दे पर गहन चर्चा की गई। भारत जल संरक्षण के लिए कई ठोस योजनाओं पर काम कर रहा है। 1951 में पहली बार भूजल की खोज शुरू की गई।

सरकार ने राष्ट्रीय जलनीतियां बनाई ताकि जल की शुद्धता को सुरक्षित रखा जा सके। नदियों की सफाई के लिए केंद्र सरकार ने कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं बनाई जिसमें अंतर्राष्ट्रीय सहयोग भी लिया गया। परंतु पहली बार जल संरक्षण के लिए किसी क्षेत्र के लोगों की निजी पहल देखने को मिली। उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के जखनी गांव ने विश्व के सामने जल संरक्षण की एक अनोखी मिसाल प्रस्तुत की है। आज यह गांव जलग्राम के नाम से प्रसिद्ध है जहां पद्मश्री उमा शंकर पांडेय जी के नेतृत्व में जल संरक्षण की प्राकृतिक विधि को अपनाकर गांव के लोगों ने अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन कर दिखाया है।

एक वक्त था जब प्रदेश के अन्य स्थानों की तरह यह गांव भी त्रस्त था। नदी, नाले सूखे पड़े थे। इस गांव में बोरिंग तक कामयाब नहीं हो पाती थी। वहीं आज इस गांव के नागरिकों और उमाशंकर जी के अथक प्रयासों की वजह से यहां 6 तालाब, 20 कुंए और दो नालों में पूरे साल

ISSN No. 2581-3528

पर्याप्त पानी भरा रहता है। मई जून की भीषण गर्मी में भी इस गांव के कुंओं और जलाशयों में 10 से 15 फीट पानी रहता है।

14 वर्ष पूर्व इस गांव के समाजसेवी श्री उमा शंकर पांडेय जी ने पूर्व राष्ट्रपति श्री ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के भाषण से प्रभावित होकर अपने गांव में जल संरक्षित करने की योजना पर काम करना शुरू किया था। उन्होंने गांव के लोगो के साथ मिलकर एक संस्था बनाई और सामुदायिक सहयोग से खेतों में मेड़बंदी का काम शुरू किया जिससे बारिश का पानी खेतों में आसानी से जमा होने लगा। इसके अलावा घरों में हैंडपंप के पानी को भी लोगों ने संरक्षित कर अपने खेतों तक पहुंचाना शुरू किया। इन कोशिशों की सफलता से उत्साहित होकर गांव वालों ने नाले, तालाब और कुंओं के जाल बिछा दिये। नतीजा आज इस गांव का एक बूंद पानी भी कभी व्यर्थ नहीं जाता है। प्राकृतिक तकनीक की वजह से गांव में फसलों की पैदावार भी अच्छी हो रही हैं। गत वर्ष इस गांव के लोगों ने 20 हजार कुंटल बासमती धान की पैदावार की थी। इन तालाबों का उपयोग सिंचाई के साथ–साथ मछली पालन के लिए भी किया जा रहा है। जखनी गांव की प्राकृतिक तकनीक से प्रभावित होकर पड़ोस के कई गांव इस मॉडल को अपनाकर अपने क्षेत्र में जल संरक्षित कर रहे हैं। इस मुहिम की शुरुआत करने वाले पद्मश्री से सम्मानित श्री उमाशंकर पांडेय जी आज जलयोद्धा के नाम से प्रसिद्ध हैं। उनका मानना हैं कि जल ही कल है और जल ही जीवन है और जल राष्ट्रीय संपदा है।

इसमें आध्यात्मिक शक्ति और ऊर्जा व्याप्त हैं। यह कभी प्रदूषित नहीं होता बल्कि इसे लोग प्रदूषित करते हैं। अगर इसे प्राकृतिक तरीके से संरक्षित किया जाये तो विश्व का जल संकट समाप्त हो सकता है। यह हम सबका सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि जल की प्राकृतिक गुणवत्ता बनी रहे ताकि प्राकृतिक जलचक्र बना रहे। मनुष्य, जीव–जंतु, फल, सब्जियां, पेड़–पौधे इन सभी में अधिक मात्रा में जल व्याप्त है, अगर जल शुद्ध और शीतल होगा तो हर जीव स्वस्थ होगा। उनका मानना है कि प्रकृति के इस अनमोल तत्व को हम सभी अपने प्रयासों से सुरक्षित रख सकते हैं। उमाशंकर जी अपने इस प्रयास को घर–घर पहुंचाने की इच्छा रखते हैं ताकि विश्व का जल संकट पूर्ण रूप से समाप्त हो जाये और प्रकृति सुरक्षित हो सके। उनके साथ मिलकर गांववालों के इन सफल प्रयासों ने आज इस गांव को विश्व भर में प्रसिद्धि दिलाई हैं और उनके इस मॉडल को दुनिया भर में अपनाया जा रहा है।

इसमें आध्यात्मिक शक्ति और ऊर्जा व्याप्त हैं। यह कभी प्रदूषित नहीं होता बल्कि इसे लोग प्रदूषित करते हैं। अगर इसे प्राकृतिक तरीके से संरक्षित किया जाये तो विश्व का जल संकट समाप्त हो सकता है। यह हम सबका सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि जल की प्राकृतिक गुणवत्ता बनी रहे ताकि प्राकृतिक जलचक्र बना रहे।

ISSN No. 2581-3528

संस्कारों की प्रथम पाठशाला : परिवार

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

जैसा पावन विचार देने वाले भारत में भारतीय सनातन संस्कृति का आधार स्तंभ कुटुंब है। कुटुंब हमारे संस्कार की प्रथम पाठशाला है और माँ उसकी प्रथम शिक्षिका। एक संस्कार संपन्न परिवार से ही संस्कारवान समाज एवं समुन्नत राष्ट्र का निर्माण होता है। भारत वैदिक काल से ही अपनी संयुक्त परिवार प्रणाली के कारण विश्व विख्यात रहा है परंतु पश्चिमीकरण के कारण हमारे संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ है। हमारे लिए बड़े दुःख का विषय है कि समूचे विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम् का विचार देने वाले भारत के संयुक्त परिवार अब टूट रहे हैं। प्रेरणा विमर्श 2024 परिवर्तन की पंच धारा– स्व, सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, नागरिक कर्तव्य और पर्यावरण पर केंद्रित था। विमर्श में कुटुंब प्रबोधन पर मा. क्षेत्र संघचालक सूर्य प्रकाश टोंक जी के उद्बोधन से संकलित विचार प्रस्तुत हैं।

सूर्यप्रकाश टोंक, क्षेत्र संघचालक, पश्चिमी उत्तर प्रदेश

परिवार समाज की प्रथम इकाई है। एक परिवार जब समूह के रुप में कार्य करता है तो वह राष्ट्रोपयोगी बन जाता है। इसलिए परिवार का समूह में काम करने का स्वभाव बनना चाहिए। कोई भी व्यक्ति सकारात्मक परिवर्तन करने की कल्पना एवं इसके लिए प्रयत्न कर सकता है लेकिन इसे अंतिम परिणिति तक ले जाने के लिए उसे समूह की आवश्यकता पड़ेगी। व्यक्ति से समूह यानी 'मैं से हम की तरफ जाने वाली इकाई' परिवार है।

परिवार समाज की प्रथम इकाई है। एक परिवार जब समूह के रुप में कार्य करता है तो वह राष्ट्रोपयोगी बन जाता है। इसलिए परिवार का समूह में काम करने का स्वभाव बनना चाहिए। कोई भी व्यक्ति सकारात्मक परिवर्तन करने की कल्पना एवं इसके लिए प्रयत्न कर सकता है लेकिन इसे अंतिम परिणिति तक ले जाने के लिए उसे समूह की आवश्यकता पड़ेगी। व्यक्ति से समूह यानी 'मैं से हम की तरफ जाने वाली इकाई' परिवार है। व्यक्ति जिस परिवार में रहता है उसका वातावरण व्यक्ति के व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव डालता है। व्यक्ति दुखी है, प्रसन्न है, आनंद में है, ये सब परिवार के वातावरण पर निर्भर करता है अगर उसको अपने जीवन का आनंद उठाना है तो परिवार आनंदमय होना चाहिए। परिवार इकाई की दृष्टि से तीन बातें महत्वपूर्ण हैं वह है भक्ति, शक्ति और आनंद। परिवार का वातावरण भक्तिमय होना चाहिए। परिवार में हमारी परंपराएं हैं उसमें कुछ न कुछ भक्ति के संदर्भ में काम होना चाहिए। उसमें शक्ति भी होनी चाहिए क्योंकि अगर परिवार को अपना संरक्षण करना है तो सक्षम होना बहुत आवश्यक है। तीसरी चीज इन दो बातों के होने से प्राप्त होने वाली है वह परिवार का आनंद है। वह अगर हमें मिलता है तो फिर जो उस परिवार के सदस्य हैं, जो उस इकाई का एक महत्त्वपूर्ण अंग है वो भी आनंद में रहेंगे। अगर आज के संदर्भ में हम देखें तो परिवार के सदस्य अलग–अलग व्यवहार करने वाले नहीं होने चाहिए। उनके बीच में अगर आपसी समझ और आपसी संवाद नहीं होगा, एक दूसरे के साथ अपना जो भी विचार है या समस्याएं हैं वह नहीं जानेंगे तो बात बनने वाली नहीं है। इसके लिए परिवार के अंदर व्यवस्था खड़ी करनी पड़ेगी। सभी सदस्य परिवार में कोई न कोई ऐसी व्यवस्था जरूर बनाएं जिसके आधार पर सब सदस्य एकत्र होकर भक्ति, भगवान के प्रति समर्पण के भाव से सामूहिक रूप से प्रातः या सायं बैठें।

परिवार ठीक प्रकार से चले इसके लिए

ISSN No. 2581-3528

सदस्यों को अपनी कुशलता के आधार पर काम करना चाहिए। एक दूसरे की सहायता करनी चाहिए। सबके अलग-अलग प्रकार के कार्य हो सकते हैं यदि वे एक दूसरे की कठिनाइयों में अपना कुछ योगदान करते हैं तो परिवार शक्ति संपन्न होगा। सभी सदस्य किसी एक समय में मिलकर आपस में अपनी-अपनी बातों को शेयर करने की व्यवस्था बना सकते हैं। भोजन एक साथ कर सकते हम सबने बचपन में सांप-सीढ़ी खेली है। उसमें कभी सीढ़ी चढ़ जाते हैं तो कभी साँप डस लेता है तो गोटी फिर नीचे आ जाती है। परिवार के साथ भी ऐसा ही है। अगर परिवार के सदस्य आपस में सहयोगी भूमिका में है तो सीढ़ी का काम करेंगे, परिवार उन्नत होगा और यदि एक दूसरे को काटने का काम कर रहे हैं तो सांप बनकर डसने का कार्य करेंगे, परिवार का पतन होगा। परिवार व्यवस्था को मानसिक एवं व्यावहारिक रूप से समन्वित भूमिका में लाने का काम परिवार के सभी सदस्यों का है। घर के बालक बालिकाएं आने वाले समय में उस परिवार को आगे या पीछे ले जाने की भूमिका में आने वाले हैं तो उनका विकास कैसा हो रहा है उस पर ध्यान देना होगा इसके लिए पांच सूत्र ध्यान में आते हैं।

सबसे पहला है शिक्षा। हमारे जो परिवार के बालक हैं वह ठीक से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं क्या? जैसे शेरनी का दूध पिया जाता है न मजबूत होने के लिए, निडर होने के लिए, वह सारे गुण शेर में होते हैं वैसे गुण लाने के लिए शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा की व्यवस्था परिवार में ठीक प्रकार से चलने वाली हो यह पहला सूत्र है।

दूसरा सूत्र परिवार में होता है संस्कार। परिवार के अंदर, समाज में कैसे व्यवहार करना है उस संस्कार की व्यवस्था परिवार में होनी ही चाहिए। बच्चों द्वारा बचपन में प्राप्त किए गये संस्कार ही उसकी भावी भूमिका तैयार करेंगे। अगर संस्कार नहीं है तो शिक्षा व्यर्थ हो जाती है। वह शिक्षा प्राप्त तो कर लेगा, नौकरी भी लग जाएगी, नाम के आगे पीएचडी या एमए या जो कुछ भी है वो तो लग जाएगा लेकिन बालक के पास अगर संस्कार नहीं है तो न तो वह परिवार के लिए, न समाज के लिए, न राष्ट्र के लिए उपयोगी होगा, गड़बड़ ही करेगा। इसलिए संस्कार के बिना शिक्षा का औचित्य ही नहीं है।

तीसरा सूत्र है संगति। बालक किन लोगों के साथ बैठ रहा है वह संगति अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बड़े सदस्यों को उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ेगा। बालक बालिकाएं देखते हैं कि परिवार के बड़े सदस्य किस संगति में हैं, उनके साथ कौन लोग बैठते हैं? वो क्या बातें करते हैं? परस्पर किस प्रकार से व्यवहार करते हैं? परिवार के साथ उसे देख कर उस नए सदस्य को जो आगे आने वाली जिम्मेदारी संभालने वाला है उसे ठीक प्रकार से निभाने की योग्यता विकसित होती है। अगर संगति ठीक नहीं है तो न शिक्षा काम की है और न संस्कार काम का है क्योंकि संस्कारों की अभिव्यक्ति भी संगति के ऊपर निर्भर करती है।

परिवार के अंदर, समाज में कैसे व्यवहार करना है उस संस्कार की व्यवस्था परिवार में होनी ही चाहिए। बच्चों द्वारा बचपन में प्राप्त किए गये संस्कार ही उसकी भावी भूमिका तैयार करेंगे। बालक शिक्षा तो प्राप्त कर लेगा, नौकरी भी लग जाएगी लेकिन यदि बालक के पास संस्कार नहीं है तो वह परिवार, समाज, राष्ट्र के लिए उपयोगी नहीं होगा। इसलिए संस्कारहीन शिक्षा का औचित्य ही नहीं है।

चौथा सूत्र है एकात्मता। परिवार के अंदर एकत्व है क्या? परिवार आपस में मिलकर काम करता है क्या? एक दूसरे की कठिनाइयों को केवल देखने-समझने तक सीमित नहीं है उसमें सहयोग करने का प्रयत्न करता है क्या? परिवार के अंदर कोई भी मुश्किल आती हो उसमें परिवार के सब सदस्य साथ मिलकर उस कठिनाई को दूर करने का प्रयत्न करते हैं क्या? और अगर वह करते हैं तो ठीक है पूर्व की तीनों बातें ठीक से काम करेंगी और अगर ठीक नहीं हैं तो पहली तीनों बातें बेकार हैं।

पांचवा और अंतिम सूत्र है समाज में परिवार का स्थान। उपरोक्त चारों सूत्र के साथ-साथ परिवार समाज में क्या भूमिका निभा रहा है यह बहुत महत्त्वपूर्ण है? क्योंकि ये चारों सूत्र मिलकर जिस व्यक्ति का निर्माण करते हैं वह व्यक्ति फिर समाज में, राष्ट्र में भूमिका निभाता है। उसे अपने कर्मों को ऐसा निर्धारित करना पड़ेगा कि परिवार, समाज या राष्ट्र की दृष्टि से उसके कर्म सकारात्मक हों, उन्नायक हों। समाज में परिवार के स्थान की सामूहिक जिम्मेदारी परिवार के सभी सदस्यों की है।

प्रयत्न कीजिए कि आप स्वयं और अपने परिवार के सदस्यों को उस दिशा में ले जाने का प्रयत्न करें कि जिससे ऊपर की जो इकाई है राष्ट्र और उससे भी ऊपर की इकाई विश्व है, उस तक के अच्छे होने की कल्पना करें। विश्व को ठीक करने की दृष्टि से पहले अपना देश ठीक होना चाहिए, अपना देश ठीक करने की दृष्टि से हमारा समाज ठीक होना चाहिए और उसका हेतु परिवार है। अगर मेरा परिवार ठीक है तो वो समाज ठीक होगा और अगर परिवार को ठीक रखना है तो मुझे ठीक होना पड़ेगा शुरुआत अपने से करनी होगी। यह मैं से हम की जो यात्रा है वह परिवार से ही प्रारंभ होती है। वसुधैव कुटुंबकम् का जो हम उद्घोष करते हैं कल्पना करते हैं वह इसी यात्रा से प्राप्त होने वाला आदर्श है।

संकलनकर्ता - डॉ. नीलम कुमारी

■

ISSN No. 2581-3528

भारत के स्वभाव में निहित है समरसता

श्री रामचरितमानस जी के उद्धरण 'ढोल, गंवार, शुद्र, पशु और नारी ..' को तोड़ मरोड़कर प्रस्तुत करने, उसकी गलत व्याख्या करने और शम्बूक वध जैसे प्रश्नों को उठाकर हिन्दू समाज को तोड़ने का षड्यंत्र लम्बे समय से होता आया है। हमें ऐसे मिथ्या प्रकरणों का उत्तर अपने आचरण से देना होगा। तथ्य यह है कि शम्बूक वध का वाल्मीकि रामायण में कोई उल्लेख नहीं है। यहां तक कि 15 से अधिक अन्य रामायण में शम्बूक वध कहीं नहीं है। किन्तु हिन्दू समाज को यह कहने का साहस लाना ही होगा कि शम्बूक वध वाले राम का भी हम निषेध करेंगे और जिस राम ने शबरी के बेर खाए उसका समर्थन करेंगे। हमारे समाज में हमें बांटने के लिए अनेक झूठे नैरेटिव गढ़े गये हैं ऐसे में हमारा दायित्व बहुत बढ़ जाता है। हमें अगर समरसता लानी है तो तर्क-वितर्क में नहीं फंसना। चार भाव समरसता की अनिवार्य शर्त है, समाज के प्रति मैत्री भाव, करुणा भाव, आनंद का भाव और तोड़ने वालों के प्रति उपेक्षा का भाव यह हमारे आचरण में होना चाहिए।

'मैं नहीं तू ही' सनातन धर्म का मूल्य है इसके अनुशीलन से समरसता आसान हो जाएगी। तुलसीदास जी ने भी लिखा है कि, 'चेतन अमल सहज सुख रासी, ईश्वर अंश जीव अविनाशी'।

सनातन मूल्यों को धारण कर संघ की साधना निरंतर चल रही है। संघ शाखा में कोई जाति, वर्ग, क्षेत्र, भाषा किसी भी आधार पर कभी भेदभाव नहीं होता। 1934 में महात्मा गांधी जी ने संघ का वर्धा शिविर देखा तो पाया कि सभी जाति के लोग परस्पर प्रेम और सम्मान के साथ एक दूसरे के साथ उस शिविर में भाग ले रहे थे। वे बहुत प्रभावित हुए। इसी प्रकार 1939 में बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने संघ का पुणे का शिविर देखकर कहा, "यहां का वातावरण अत्यंत पवित्र व समरस है। यहां पर सभी लोग अपनी जातिगत पहचान को भूल गए हैं।"

मंजुल पालीवाल, लेखक एवं सामाजिक कार्यकर्ता

'मैं नहीं तू ही' सनातन धर्म का मूल्य है इसके अनुशीलन से समरसता आसान हो जाएगी। तुलसीदास जी ने भी लिखा है कि, 'चेतन अमल सहज सुख रासी, ईश्वर अंश जीव अविनाशी'।

संघ ने हिन्दू समाज में फैलाए गए इस कुरीति कुचक्र को बहुत पहले ही समझ लिया था इसलिए समय-समय पर संघ ने कुरीति उन्मूलन के प्रयास भी किये हैं। 1969 में उडुपी में सम्मेलन में संतों ने घोषणा की थी, "हिन्दवः सोदराः सर्वे, न हिन्दू पतितो भवेत्। मम दीक्षा हिन्दूः रक्षा, मम मंत्रः समानता" यानी कि हिन्दू-हिन्दू सहोदर अर्थात् एक ही उदर से उत्पन्न हुए भाई हैं कोई भी हिन्दू पतित नहीं है। हिन्दू की रक्षा करना मेरा धर्म है और मेरा मंत्र समानता है। हिन्दू धर्म में छुआ-छूत अस्पृश्यता कहीं भी नहीं है, वेदों की एक भी ऋचा में, एक भी श्लोक में छुआ-छूत नाम का, अस्पृश्यता नाम का कोई शब्द नहीं है।

तृतीय सरसंघचालक बाला साहब ने वसंत व्याख्यान माला में कहा था, 'अगर अस्पृश्यता गलत नहीं है तो इस दुनिया में कुछ भी गलत नहीं है, इसको जड़ मूल से समाप्त होना ही चाहिए।' आज भी संघ हिन्दू समाज में व्याप्त इस कुरीति के उन्मूलन को दृढ संकल्पित है। 2015 विजयदशमी उत्सव पर पूजनीय मोहन भागवत जी ने कहा था कि जलाशय, मंदिर, शमशान सबके लिए हों।

ISSN No. 2581-3528

हमारी परम्परा ऊंच-नीच का उन्मूलन करती है बस हमें समझने की आवश्यकता है। त्रेता युग का महाग्रंथ रामायण, भगवान वाल्मीकि जी ने लिखा। द्वापर युग का महाग्रंथ महाभारत, वेदव्यास जी ने लिखा। कलयुग का सबसे बड़ा ग्रंथ भारत का संविधान पूजनीय बाबासाहब भारत रत्न डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के नेतृत्व में बना। तीन युगों के ये बड़े तीन ग्रंथ किसने लिखे? तथाकथित अस्पृश्य कही जाने वाली जातियों से संबंध रखने वाले महापुरुषों ने। तो हमारे धर्म में कहां अस्पृश्यता थी? हमें शम्बूक वध तो याद रहता है लेकिन हम यह बताना भूल जाते हैं कि शबरी मैया के बेर भी तो राम जी ने खाए थे। निषाद राज गुह और केवट को गले लगाया था। सुग्रीव, जामवंत को आदर दिया था। पक्षीराज जटायु को पिता के समान सम्मान देकर उनका अंतिम संस्कार किया था। गिरिजन और वनवासी लोगों में स्वाभिमान का बोध जगाया था। अभी 1017 ईसवी में संत रामानुजाचार्य जी हुए, वे जब स्नान के लिए जाते थे तो ब्राह्मणों के कंधे पर हाथ रखकर जाते, वापस लौटते तो शूद्रों के साथ आते थे। विश्व की 26वीं और भारत की दूसरी सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ इक्वलिटी' संत रामानुजाचार्य जी की ही है। इसी प्रकार सनातन परम्परा के प्रसिद्ध संत स्वामी रामानंद जी के 12 शिष्य हैं उनमें से कोई भी ब्राह्मण नहीं था। सदियों पहले एक ब्राह्मण संत गैर-ब्राह्मणों को अपना शिष्य बनाकर उन्हें सनातन धर्म का प्रतिनिधि बनाकर भेजता है। आखिर विषमता कहां थी? सनातन मूल्यों से पोषित सिख पंथ और आर्य समाज जैसे बड़े आन्दोलनों ने भी यही सिद्ध किया कि ऊंच-नीच के भाव का सनातन परम्परा में कोई स्थान नहीं है। भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी जी, आद्य शंकराचार्य, भक्तिकाल की संत परम्परा, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, मदन मोहन मालवीय, राजा राम मोहन राय, संत नारायण गुरु, संत शंकरदेव जैसे अनगिनत महापुरुषों की प्रेरणा और उनके कामों को समाज में हमें लेकर जाना होगा। हमारे ये संत-महापुरुष साक्षी हैं कि सनातन परम्परा में छुआ-छूत का कोई स्थान न था न है न कभी रहेगा। यह कुछ नैरेटिव गढ़े गए थे। हां! कुछ गलतियां भी थीं, बाहरी आक्रान्ताओं के काल में कुछ विसंगतियां भी हमारे समाज में आ गईं हमें उन्हें स्वीकार करना होगा और इसे ठीक करने का दायित्व हम सबका है।

पहले हमने अपने खेत बांटे, खलिहान बांटे, घर बांटे, माँ के जेवर बांटे और फिर हमने अपने महापुरुषों को बांट उन महापुरुषों को एक जाति का बना दिया तो हमें उसको तोड़ना पड़ेगा अगर किसी महापुरुष की जयंती हमारे आस-पड़ोस में मनाई जा रही है तो हमें सर्व समाज की भागीदारी कैसे हो? इसकी चिंता करनी होगी।

शुरुआत कहां से होगी? मेरे व्यक्तिगत जीवन में समरसता है क्या? मेरा अपने ड्राइवर के साथ, मेरा अपने धोबी भाई के साथ, मेरा अपने नाई भाई आदि जिनके साथ दैनंदिन जीवन में कार्य पड़ता है उनके साथ मेरा व्यवहार कैसा है? उसका चिंतन करेंगे तो समरसता होगी ही। अपने व्यक्तिगत जीवन में, सामाजिक जीवन में, पारिवारिक जीवन में समरसता आये ऐसा अपना प्रयास हो।

एक उदाहरण कन्या पूजन का है, हम कन्या पूजन करते हैं। कन्याओं को वर्ष में दो बार बहुत सम्मान से बुलाते हैं, उनके पैरों का प्रक्षालन करेंगे, उनकी पूजा करेंगे, उन्हें एक दिन की देवी बनाएंगे, लेकिन क्या कभी यह ध्यान देते हैं कि उस कन्या के स्कूल की फीस गई है कि नहीं गई? वह पढ़ती भी है कि नहीं पढ़ती? स्कूल में जाती भी है कि नहीं जाती? अगर हम कन्या पूजन करते हैं तो थोड़ा पता भी कर लें कि उस कन्या का हाल क्या है? ऐसा विचार करने से हम सामाजिक समरसता की दिशा में बढ़ेंगे। आप सोचिए हजार वर्ष पहले भी बाहरी आक्रमणों के समय लोग हमें तोड़ लेते थे, हमारे भीतर फूट डाल देते थे और लाभ लेते थे और आज हजार वर्ष बाद भी ऐसे लोग है जो हमारे देश में जब चाहे दंगा करवा देते हैं, जब चाहे वैचारिक विभाजन करा देते हैं, तो इन सब चीजों से हमें सावधान रहना पड़ेगा। हमने अपने खेत बांटे, खलिहान बांटे, घर बांटे, माँ के जेवर बांटे और फिर हमने अपने महापुरुषों को भी बांट लिया? महापुरुषों को भी एक जाति का बना दिया। हमें इस कुरीति को तोड़ना पड़ेगा तब हम समरस भारत, समर्थ भारत बनाने में सक्षम होंगे। पांच पीढ़ी पहले हमारे पुरखों ने जो सपना देखा था कि वैभव सम्पन्न भारत बनाएंगे वह तब हो पाएगा जब हमारा देश समरस होगा। ■

ISSN No. 2581-3528

नेकी का डिब्बा : इंसानियत जिंदा है

मानस वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
महाराजा अग्रसेन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्राचीन काल से भारत सहिष्णुता, परोपकार और मानवीय मूल्यों का केंद्र रहा है। हमारी संस्कृति में दूसरों की सहायता करना, वस्तुएं साझा करना और जरूरतमंदों की सहायता करना महत्वपूर्ण आदर्श माने गए हैं। इसी परंपरा को आगे बढ़ाने वाली एक अनूठी पहल है 'नेकी का डिब्बा'। यह साधारण लेकिन प्रभावशाली अभियान समाज में सहयोग और समानता की भावना को बढ़ावा देता है। दिल्ली–एनसीआर में इस पहल ने खासतौर पर एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है।

नेकी का डिब्बा: क्या है यह?: 'नेकी का डिब्बा' एक सार्वजनिक स्थान पर रखा गया डिब्बा या स्थान है, जहां लोग अपनी उपयोग में न आने वाली लेकिन अच्छी स्थिति वाली वस्तुएं, जैसे पुराने कपड़े, जूते, किताबें, खिलौने आदि रख सकते हैं। जरूरतमंद लोग यहां से बिना किसी भेदभाव या झिझक के अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तुएं लेकर जा सकते हैं।

इस पहल का मुख्य उद्देश्य समाज के उन वर्गों की मदद करना है जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं और अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं। साथ ही, यह अभियान उन लोगों के लिए एक मंच प्रदान करता है, जो समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना चाहते हैं और अपने अतिरिक्त संसाधनों को सही तरीके से वंचित वर्ग के साथ साझा करना चाहते हैं।

दिल्ली-एनसीआर में नेकी का डिब्बा: एक सफल उदाहरण : दिल्ली के विभिन्न इलाकों में 'नेकी का डिब्बा' और 'नेकी की दीवार' जैसी पहलें दिखाई देती हैं। शाहदरा, द्वारका और नोएडा जैसे इलाकों में ये आपको दिखाई दे जाएंगी।

द्वारका में नेकी की दीवार : द्वारका के सेक्टर 6 में एक प्रमुख स्थान पर 'नेकी की दीवार' स्थापित की गई है। इस दीवार पर लोग अपने पुराने कपड़े, जूते, और अन्य वस्तुएं लाते हैं। यह स्थान एक ऐसा मंच बन गया है, जहां समाज के संभ्रांत और जरूरतमंद वर्ग आपस में जुड़ते हैं। यहां आने वाले लोग एक–दूसरे की मदद करने के उद्देश्य से अपना सामान छोड़ते हैं और जरूरतमंद अपनी आवश्यकता की चीजें ले जाते हैं।

शाहदरा में नेकी का कोना : शाहदरा में भी 'नेकी का कोना' नाम से एक अभियान चलाया गया है। यहां पर स्थानीय निवासियों ने एक जगह बनाई है, जहां परोपकारी लोग अपनी वस्तुएं दान करते हैं। इस पहल में सैकड़ों लोगों ने अपनी भूमिका निभाई है।

नेकी का डिब्बा : समाज पर प्रभाव : 'नेकी का डिब्बा' समाज पर कई सकारात्मक प्रभाव डालता है।

1. सामाजिक समरसता को बढ़ावा

यह अभियान समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करता है। लोग जाति, धर्म और सामाजिक स्थिति से ऊपर उठकर एक–दूसरे की मदद करते हैं। यह सामाजिक समरसता और भाईचारे का उदाहरण है।

2. पुन: उपयोग का महत्व

यह पहल संसाधनों के पुनः उपयोग को बढ़ावा देती है। जिन वस्तुओं का उपयोग किसी एक व्यक्ति के लिए खत्म हो गया हो, वे वस्तुएं दूसरों के लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं। इससे कचरा भी कम होता है और पर्यावरण संरक्षण में मदद मिलती है।

भविष्य के लिए सुझाव : 'नेकी का डिब्बा' को और प्रभावी बनाने के लिए कुछ उपाय किए जा सकते हैं–

1. स्थापना में वृद्धि : इसे अधिक सार्वजनिक स्थानों जैसे मेट्रो स्टेशन, बस स्टैंड, पार्क और बाजारों में स्थापित किया जा सकता है।

2. सामुदायिक भागीदारी : स्थानीय समुदायों और गैर–सरकारी संगठनों को इसमें शामिल किया जा सकता है।

3. साफ–सफाई और रख–रखाव : नियमित रूप से इन स्थानों की सफाई और रख–रखाव सुनिश्चित करना चाहिए।

4. जागरूकता अभियान : सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों से इस पहल के बारे में अधिक जागरूकता फैलाई जा सकती है।

5. विविधता : कपड़ों के अलावा किताबें, खिलौने, स्टेशनरी और अन्य उपयोगी वस्तुएं भी डिब्बे में रखी जा सकती हैं।

नेकी का डिब्बा : एक प्रेरणा स्रोत : 'नेकी का डिब्बा' सिर्फ एक डिब्बा नहीं है; यह समाज के लिए प्रेरणा स्रोत है। यह हमें सिखाता है कि अपने छोटे–छोटे योगदान से भी हम समाज में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। यह पहल हमें दूसरों के दर्द को समझने और उनकी मदद करने के लिए प्रेरित करती है।

निष्कर्ष : भविष्य में, इस पहल को और व्यापक रूप दिया जा सकता है, ताकि यह समाज के हर वर्ग तक पहुंचे और लोगों की मदद के साथ–साथ सामाजिक समरसता को भी बढ़ावा दे। नेकी का डिब्बा न केवल एक सामाजिक अभियान है, बल्कि यह मानवता और परोपकार का प्रतीक बन चुका है। ■

ISSN No. 2581-3528

नागरिक कर्तव्यों का बोध कराता आँचल वेलफेयर फाउंडेशन

सौम्य सिंह रावत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं। संघ व अन्य समाजसेवी संगठनों के साथ कार्य करते हुए और उनकी कार्य पद्धति को देखकर उनके मन में भी समाज के प्रति सेवा का भाव उत्पन्न हुआ। लोगों के सामाजिक जीवन, उनका रहन-सहन एवं उनकी रोज़मर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें जूझते देखने के बाद उनके अंदर एनजीओ शुरू करने की इच्छा जागी, जिसका परिणाम है 'आँचल वेलफेयर फाउंडेशन'।

प्रत्येक समाज की अपनी व्यवस्था और रहन–सहन का अपना तरीका होता है जिसे बनाये रखना वहां के नागरिकों का मौलिक कर्तव्य है। भारत का संविधान न केवल मौलिक अधिकारों की बात करता है बल्कि नागरिकों को अपने मौलिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक भी करता है। परंतु आज के समकालीन परिदृश्य में सामाजिक व्यवस्था बिगड़ रही है। देशभर में कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो गयी हैं जो समाज और राष्ट्र की उन्नति में बाधा उत्पन्न कर रही हैं। हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार, बेईमानी, धोखाधड़ी जैसी घटनाएं आम हो गई हैं जिसे बढ़ावा देने के लिए हमारे बीच रहने वाले समाज के ही कुछ लोग उत्तरदायी हैं। जिसके विरुद्ध हमारी सरकारें निरंतर प्रयास करती रही हैं। ऐसी स्थिति में देशवासियों की जिम्मेदारी मौलिक कर्तव्यों तक सीमित नहीं रह जाती है बल्कि उन्हें एक कदम आगे बढ़कर देश की बिगड़ती स्थिति को सम्भालने की ओर जाने को प्रेरित करती हैं। हमें आगे आकर नागरिक कर्तव्यों के प्रति अपनी जिम्मेदारी को संजीदगी से सम्भालना होगा।

ऐसी ही एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है गाजियाबाद में स्थित आँचल वेलफेयर फाउंडेशन जिसका उद्देश्य है जरूरतमंद लोगों तक सहयोग पहुंचाना ताकि समाज में सार्थक बदलाव लाना संभव हो सके। आँचल वेलफेयर फाउंडेशन एक एनजीओ है जो अपने कार्यक्षेत्रों में पशु कल्याण, पर्यावरण संरक्षण, महिला कल्याण, अनाथ एवं वृद्धावस्था कल्याण के साथ–साथ जरूरतमंदो तक शिक्षा तथा पौष्टिक आहार पहुंचाने का काम भी करता है। इस फाउंडेशन को सौम्य सिंह रावत जी चलातें है। उनके इस संस्थान के साथ कई वॉलंटियर्स अपनी स्वेच्छा से जुड़ कर अलग–अलग क्षेत्रों में अपना योगदान दे रहे हैं। सौम्य सिंह रावत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक हैं। संघ व अन्य समाजसेवी संगठनों के कैम्प में शामिल होकर और उनकी कार्य पद्धति को देखकर उनके मन में भी समाज के प्रति सेवा का भाव उत्पन्न हुआ। लोगों के सामाजिक जीवन, उनका रहन–सहन एवं उनकी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए उन्हें जूझते देखने के बाद उनके अंदर एनजीओ शुरू करने की इच्छा जागी। इस बीच उन्होंने लगभग 150 से अधिक एनजीओ के साथ जुड़कर कई प्रोजेक्ट पर कार्य किया। कोविड के दौरान वह कई रेस्क्यू ऑपरेशन के साथ भी जुड़े रहे और लोगों तथा बेजुबान जानवरों की हर सम्भव मदद की। इन सभी अनुभवों से प्रेरित होकर उन्होंने आँचल वेलफेयर फाउंडेशन की शुरुआत की। वह अपनी इस यात्रा का जिक्र करते हुए बताते हैं कि अपनी एक छात्रा को खोने के बाद उनके जीवन में एक बड़ा टर्निंग पॉइंट आया और उन्होंने स्वयं को समाज के प्रति समर्पित कर दिया। आँचल वेलफेयर फाउंडेशन की स्थापना के साथ उन्होंने अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के बीच संतुलन स्थापित किया। अब तक यह फाउंडेशन कई सामाजिक परियोजना पर काम कर चुकी है।

वर्तमान में यह एनजीओ कई प्रतिष्ठित संगठनों और विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर कार्य कर रही है और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण योगदान दे भी रही है।

संकलनकर्ता - डॉ. दीपा रानी ■

ISSN No. 2581-3528

हेलमेट मैन की कहानी स्वयं उनकी जुबानी

देश में प्रत्येक वर्ष दुपहिये वाहनों से सम्बंधित दुर्घटनाओं में हजारों लोग जान गंवा देते हैं जिनमें अधिकांश लोग वे होते हैं जो दुपहिये वाहन पर हेलमेट का उपयोग नहीं करते हैं। इस समस्या को समझते हुए नोएडा के निवासी राघवेन्द्र जी ने एक पहल की और आज वे एक जागरूक नागरिक के रूप में अपने नागरिक कर्तव्य का पालन कर 'हेलमेट मैन' के नाम से लोगों के दिलों में जगह बना चुके हैं। उनसे बात की केशव संवाद टीम के सदस्य धीरज त्रिपाठी ने, प्रस्तुत है बातचीत के अंश -

धीरज त्रिपाठी
स्वतंत्र टिप्पणीकार

आप अपने बारे में बताइए और आपको सड़क सुरक्षा हेलमेट वितरण के इस अभियान चलाने के लिए किसने और कैसे प्रेरित किया?

मैं एक सामाजिक कार्यकर्ता हूं और जागरूकता अभियानों में सक्रिय रहता हूं। मुझे सड़क सुरक्षा और हेलमेट वितरण की प्रेरणा एक व्यक्तिगत और हृदयविदारक घटना से मिली। हमारे देश में प्रतिदिन लगभग 20 लोग हेलमेट न पहनने के कारण सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवा रहे हैं। पूरे देश में विशेष रूप से युवा वर्ग के बीच जागरूकता की भारी कमी है। अक्सर यह देखा जाता है कि जब कोई दु:खद घटना घटती है, तभी लोगों की आंखें खुलती हैं। मेरे जीवन में भी एक ऐसा ही हादसा हुआ, जिसने मुझे गहराई से झकझोर दिया। मेरा एक घनिष्ठ मित्र, जो बिहार से आकर ग्रेटर नोएडा में पढ़ाई कर रहा था, अपने भविष्य को संवारने और अपने परिवार का सहारा बनने का सपना देखता था। वह अपने माता–पिता की इकलौती संतान था। दुर्भाग्यवश, एक सड़क दुर्घटना में हेलमेट न पहनने के कारण उसने अपनी जान गंवा दी। उसकी असमय मृत्यु ने न केवल उसके परिवार को गहरे शोक और आर्थिक संकट में डाल दिया, बल्कि मुझे भी आत्ममंथन करने पर मजबूर कर दिया। उस परिवार की पीड़ा और टूटे हुए सपनों को देखकर मेरे भीतर एक आंतरिक आवाज उठी कि मुझे देशभर में युवाओं और माता–पिता को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करना चाहिए। तब से मैंने यह संकल्प लिया है कि मैं सड़क सुरक्षा और हेलमेट पहनने की अनिवार्यता को लेकर देशभर में जागरूकता फैलाऊंगा, ताकि इस तरह के हादसों को रोका जा सके और कीमती जिंदगियों को बचाया जा सके।

हेलमेट वितरण के क्षेत्र में आपका सबसे प्रेरणादायक अनुभव क्या रहा है?

मैं अब तक देश के 22 राज्यों में लगभग 65,000 हेलमेट का वितरण कर चुका हूं। मेरे इस अभियान के दौरान करीब 36 लोगों का जीवन इन्हीं हेलमेट की वजह से सुरक्षित रह पाया है। इससे मुझे ऐसा अनुभव होता है मानो कोई अदृश्य शक्ति मुझे देख रही है और इस कार्य को निरंतर गति देने के लिए प्रेरित कर रही है। अनजान शहरों में, अनजान लोगों की सहायता करके मुझे एक अद्भुत संतोष और आत्मिक शांति का अनुभव होता है। पूरे देश में एक पारिवारिक भावना देखने को मिलती है, जो प्रेम, करुणा और मानवीयता के धागे से हमें जोड़ती है। यह अत्यंत दु:खद है कि हर वर्ष बिना किसी युद्ध के लगभग 1,70,000 परिवार अपने विकास और भविष्य को खो देते हैं, क्योंकि उनके अपने लोग सड़क दुर्घटनाओं में असमय अपनी जान गंवा बैठते हैं। जब कोई व्यक्ति भगवान की मूर्ति के पास मेरी तस्वीर रखता है या मुझसे मिलकर श्रद्धा से प्रणाम करता है, तो मेरा दिल और आंखें दोनों भर आती हैं। यह भावनात्मक पल मुझे और अधिक समर्पण के साथ इस कार्य को आगे बढ़ाने की प्रेरणा देते हैं। मैं इस कार्य को इसी अनुभूति, समर्पण और प्रतिबद्धता के साथ जारी रखूंगा, ताकि हम और अधिक जिंदगियों को बचा सकें और देश में सड़क सुरक्षा को एक आंदोलन का रूप दे सकें।

किसी ऐसे उदाहरण के बारे में बताइए जहां आपने सड़क सुरक्षा के लिए

ISSN No. 2581-3528

जागरूकता फैलाने में बाधाओं का सामना किया हो। आपने इन बाधाओं को कैसे पार किया? अभियान हेतु संसाधनों की पूर्ति के बारे में बताइए ?

मैंने नोएडा का अपना घर बेच दिया, नौकरी छोड़ दी और अपने जीवन को पूरी तरह इस अभियान के लिए समर्पित कर दिया। मेरे पिता का सहयोग सदैव मेरे साथ रहता है। वे न केवल भावनात्मक रूप से मेरा समर्थन करते हैं, बल्कि आर्थिक रूप से भी मेरी सहायता करते हैं। इसके अलावा, कई परिवार भी अपनी भावनाओं और स्मृतियों के रूप में इस अभियान में योगदान देते हैं। कुछ परिवार अपने प्रियजनों की याद में वार्षिक रूप से हेलमेट दान करते हैं। एक बहन ने तो अपने भाई की स्मृति में 100 से अधिक हेलमेट दान किए। देश-विदेश में रहने वाले कुछ लोग भी अपने परिवार के सदस्यों की स्मृति में हेलमेट भेजते रहते हैं। इसी तरह समाज और पीड़ित परिवारों द्वारा दिए गए सहयोग और समर्थन से मैं अपने इस कार्य को आगे बढ़ा रहा हूं। अब तक ईश्वर की कृपा और लोगों के सहयोग से मुझे कभी भी संसाधनों की कमी महसूस नहीं हुई।

समाज के विभिन्न समूहों के साथ जुड़ने के लिए आप कौन-सी रणनीतियाँ अपनाते हैं, खासकर युवाओं और छात्रों के बीच में ?

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट द्वारा चार साल से ऊपर के बच्चों के लिए हेलमेट पहनने को अनिवार्य करने का कानून पारित किया गया है। यह कानून बच्चों की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी सड़क सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए गांववासियों के सहयोग से हेलमेट बैंक स्थापित करने की योजना बनाई गई है। इसके माध्यम से लोगों को मुफ्त हेलमेट उपलब्ध कराए जाएंगे, जिससे सड़क दुर्घटनाओं को कम किया जा सके। इसके अलावा, आधुनिक बाइकों की पिछली सीट की डिजाइन एक गंभीर समस्या है, क्योंकि यह सुरक्षा के लिहाज से उपयुक्त नहीं है। इस विषय पर भी गंभीर विचार-विमर्श की आवश्यकता है, ताकि बाइकों की डिजाइन को अधिक सुरक्षित बनाया

जा सके। मैंने उत्तराखंड सरकार के साथ 'रोड सेफ्टी ब्रांड एंबेसडर' के रूप में काम किया है और इस दौरान कई महत्वपूर्ण मुद्दों को सरकार के सामने रखा है। इन मुद्दों में सड़क सुरक्षा सुधार, हेलमेट की अनिवार्यता, दुर्घटना पीड़ितों के लिए सहायता प्रणाली को मजबूत करना और जागरूकता अभियानों का विस्तार शामिल है। ऐसे कई महत्वपूर्ण विषय हैं जिन पर मैं लगातार काम कर रहा हूं और आगे भी पूरी प्रतिबद्धता और समर्पण के साथ इस मिशन को आगे बढ़ाता रहूंगा। मेरा उद्देश्य देश को सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में और अधिक जागरूक और सुरक्षित बनाना है।

अपने काम के दौरान भावनात्मक थकान को कैसे दूर करते हैं? इस कार्य में आपके परिवार का सहयोग कैसे रहता है?

सबसे पहले, मैं अपनी जीवनसंगिनी का हृदय से धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने हर कठिन परिस्थिति में मेरा साथ दिया। एक समय ऐसा भी आया जब मुझे अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी और अपने घर को बेचना पड़ा। कोविड के दौरान आर्थिक तंगी के कारण मेरी पत्नी की ज्वेलरी भी मुथूट फाइनेंस के माध्यम से नीलाम हो गई। लेकिन इन कठिनाइयों के बावजूद मेरा हौसला कभी नहीं टूटा। मेरे परिवार ने हर कदम पर मेरा हौसला बढ़ाया और मुझे निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। मेरी माता जी, जो कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रही थीं, अंततः इस दुनिया को छोड़कर चली गईं। उनके अंतिम समय में दिए गए शब्द आज भी मेरे जीवन का संबल बने हुए हैं। उन्होंने कहा था- "बेटा, उदास मत होना। मैं जा रही हूं, लेकिन देश की हर माँ का आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा।" उनके इन शब्दों ने मेरे जीवन का लक्ष्य स्पष्ट कर दिया और मुझे एक नई ऊर्जा दी। अब मेरा यह प्रयास है कि मैं अपने कार्यों के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाऊं और अपने माता-पिता के सपनों को साकार कर सकूं।

आने वाले वर्षों में इस अभियान का क्या लक्ष्य रहेगा? अभियान को लेकर आपकी दीर्घकालिक योजना क्या है?

मेरा लक्ष्य वर्ष 2025 तक 200 स्थानों पर हेलमेट बैंक स्थापित करना है, जहां कोई भी व्यक्ति अपने मोबाइल नंबर के माध्यम से पंजीकरण कर निःशुल्क हेलमेट प्राप्त कर सके। यह सुविधा पूरी तरह निःशुल्क होगी, ताकि सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके और लोगों की जान बचाई जा सके इसके अलावा, मेरा मानना है कि यदि कोई आम नागरिक सड़क दुर्घटना में पीड़ित की मदद करता है, तो उसे सरकार द्वारा सम्मानित किया जाना चाहिए। साथ ही, दुर्घटना पीड़ित परिवारों को सरकारी सहायता राशि समय पर और बिना किसी परेशानी के उपलब्ध कराई जानी चाहिए। मैंने युवाओं की एक टीम तैयार करने की योजना बनाई है, जिसे सड़क सुरक्षा और आपातकालीन स्थितियों से निपटने के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इस टीम का मुख्य उद्देश्य लोगों में यह जागरूकता फैलाना है कि-"जैसे कोई व्यक्ति बिना जूते-चप्पल पहने घर से बाहर नहीं जाता, वैसे ही किसी को भी बिना हेलमेट पहने बाइक या साइकिल नहीं चलानी चाहिए।" यह अभियान न केवल सड़क सुरक्षा को एक आंदोलन का रूप देगा, बल्कि देश के युवाओं को जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनने के लिए प्रेरित भी करेगा। मेरा प्रयास है कि यह पहल देशभर में सुरक्षा और सेवा की एक मिसाल बने। ■

ISSN No. 2581-3528

परोपकार के भाव से संपोषित भारत की दान परम्परा

प्रहलाद सबनानी
सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक,
भारतीय स्टेट बैंक

सम्पूर्ण विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है, जिसमें निवासरत नागरिक, चाहे वह कितना भी निर्धन क्यों न हो, अपनी कमाई में से कुछ राशि का दान अवश्य करता है, यह हमारे संस्कारों में निहित है। भारतीय शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि महर्षि दधीचि ने देवताओं को असुरों पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से अपने शरीर का दान दिया, राजा शिबि ने कपोत रक्षार्थ अपने शरीर का मांस दान दिया, असुरों के राजा बलि ने वामनावतार को दान करने का संकल्प लिया।

हिन्दू संस्कृति के संस्कारों में दान-दक्षिणा की परम्परा का विशेष महत्व है। भारत में विभिन्न त्यौहारों एवं महापुरुषों के जन्म दिवस पर्व पर मठों-मंदिरों, गुरुद्वारों एवं अन्य पूजा स्थलों पर समाज के सम्पन्न नागरिकों द्वारा दान करने की प्रथा अति प्राचीन एवं सामान्य प्रक्रिया है। हिन्दू चिंतन में समाज के निर्धन वर्ग की सहायता करना ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा माना जाता है। समाज में आपस में मिल-बांटकर खाने-पीने की प्रथा भी भारत में सदियों से रही है और यह प्रथा भारतीय समाज में बहुत आम है। परिवार में किसी भी शुभ अवसर पर अथवा किसी विशेष आयोजन इत्यादि पर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच खुशियाँ बांटने की प्रथा भारतीय परम्परा का अभिन्न अंग है। इस उपलक्ष में कई बार तो बहुत बड़े स्तर पर सामाजिक एवं धार्मिक आयोजन भी किए जाते हैं, जैसे जन्म दिवस मनाना, परिवार में विवाह समारोह के पश्चात समाज में नाते रिश्तेदारों, दोस्तों एवं मिलने वालों को आमंत्रित करना, आदि बहुत ही सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत के विभिन्न मठों, मंदिरों, गुरुद्वारों एवं अन्य पूजा स्थलों पर प्रतिदिन 10 करोड़ से अधिक नागरिकों को प्रसाद के रूप में भोजन वितरित किया जाता है।

विश्व में कदाचित् भारत ही एकमात्र देश है, जिसमें निवासरत नागरिक, चाहे वह कितना भी निर्धन क्यों न हो, अपनी कमाई में से कुछ राशि का दान अवश्य करता है, यह हमारे संस्कारों में निहित है। भारतीय शास्त्रों में वर्णन मिलता है कि महर्षि दधीच ने देवताओं को असुरों पर विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से, अपने शरीर को ही दान में दे दिया था, राजा शिबि ने कपोत की जान बचाने हेतु अपने शरीर का मांस दान दिया, असुरों के राजा बलि ने वामनावतार को दान देने का संकल्प लिया। ऐसे अनगिनत उदाहरण भारतीय परम्परा में विद्यमान हैं जो दान की महिमा वर्णित करते हैं।

आज के युग में जब अर्थ को अत्यधिक महत्व प्रदान किया जा रहा है, तब अधिक से अधिक धनराशि का दान करना ही शुभ कार्य माना जा रहा है। इस दृष्टि से वैश्विक स्तर पर नजर डालने पर ध्यान में आता है कि दुनिया में सबसे बड़े दानदाता के रूप में आज भारत के टाटा

ISSN No. 2581-3528

उद्योग समूह के श्री रतन टाटा का नाम सबसे ऊपर उभर कर सामने आता है। इस सूची में टाटा समूह के संस्थापक श्री जमशेदजी टाटा का नाम भी बहुत सम्मान के साथ लिया जाता है, जिन्होंने अपने जीवन में शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में 8.29 लाख करोड़ रुपए की राशि का महादान दिया था। इसी प्रकार, श्री रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा समूह ने वर्ष 2021 तक 8.59 लाख करोड़ रुपए की राशि का महादान दिया था। श्री रतन टाटा केवल भारत स्थित संस्थानों को ही दान नहीं देते थे बल्कि वैश्विक स्तर पर समाज की भलाई के लिए कार्य कर रहे संस्थानों को भी दान की राशि उपलब्ध कराते थे। आपने वर्ष 2008 के महामंदी के दौरान अमेरिका स्थित कार्नेल विश्वविद्यालय को 5 करोड़ अमेरिकी डॉलर का दान दिया था। श्री रतन टाटा ने आर्थिक समस्याओं से जूझ रहे छात्रों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के उद्देश्य से जे. एन. टाटा एंडाउमेंट, सर रतन टाटा स्कॉलरशिप एवं टाटा स्कॉलरशिप की स्थापना भी की थी। श्री रतन टाटा अपनी कमाई का बहुत बड़ा भाग दान में दे देते थे, अतः उनका नाम कभी भी अमीरों की सूची में बहुत ऊपर उठकर नहीं आ पाया। इस सूची में आप सदैव नीचे ही बने रहे। श्री रतन टाटा जी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने अपने जीवन काल में इतनी बड़ी राशि का दान किया था कि आज विश्व के 2766 अरबपतियों के पास इतनी सम्पत्ति भी नहीं है।

यूं तो टाटा समूह ने भारत राष्ट्र के निर्माण में बहुत ही अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परंतु कोरोना महामारी काल में श्री रतन टाटा के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है। जिस समय पूरा विश्व कोरोना महामारी से जूझ रहा था, उस समय श्री रतन टाटा ने न केवल भारत बल्कि विश्व के कई देशों को भी आर्थिक सहायता के साथ-साथ वेंटिलेटर, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई) किट, मास्क और दस्ताने आदि सामग्री उपलब्ध कराई। श्री रतन टाटा के निर्देशन में टाटा समूह ने इस संकटकाल में 1000 से अधिक वेंटिलेटर और रेस्पिरेटर, 4 लाख पीपीई किट, 35 लाख मास्क, दस्ताने और 3.50 लाख परीक्षण किट चीन, दक्षिणी कोरिया आदि देशों से आयात कर भारत में उपलब्ध कराए थे।

श्री रतन टाटा के पूर्वज पारसी समुदाय से थे जो ईरान से आकर भारत में रच बस गए थे। श्री रतन टाटा ने न केवल भारतीय हिन्दू संस्कृति के संस्कारों को अपने जीवन में उतारा, बल्कि इन संस्कारों का अपने पूरे जीवनकाल में अक्षरशः अनुपालन भी किया।

टाटा समूह का वर्णन तो यहां केवल श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में किया जा रहा है। अन्यथा, भारत में ऐसे कई औद्योगिक घराने हैं जिन्होंने अपनी पूरी संपत्ति को ट्रस्ट के माध्यम से समाज उत्थान हित दान में दिया है। प्राचीन भारत में यह कार्य राजा-महाराजाओं द्वारा किया जाता रहा है। सनातन हिन्दू संस्कृति के विभिन्न शास्त्रों में यह वर्णन मिलता है कि ईश्वर ने जिसको सम्पन्न बनाया है, उसे समाज में वंचित वर्ग की भलाई के लिए सहयोग करना चाहिए। वर्तमान में तो निगमित सामाजिक दायित्व (सी. एस. आर. - कोरपोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी) के सम्बंध में कानून ही बना दिया गया है। जिन कम्पनियों की सम्पत्ति 500 करोड़ रुपए से अधिक है अथवा जिन कम्पनियों का वार्षिक व्यापार 1000 करोड़ रुपए से अधिक है अथवा जिन कम्पनियों का वार्षिक शुद्ध लाभ 5 करोड़ से अधिक है, उन्हें इस कानून के अंतर्गत अपने वार्षिक शुद्ध लाभ के दो प्रतिशत की राशि का उपयोग समाज की भलाई के लिए चलाई जा रही परियोजनाओं पर व्यय करना आवश्यक होता है। इन विभिन्न मदों पर खर्च की जाने वाली राशि का प्रतिवर्ष अंकेक्षण भी कराना होता है, ताकि यह जानकारी प्राप्त की जा सके कि राशि का सदुपयोग समाज की भलाई के लिए किया गया है एवं इस राशि का किसी भी प्रकार से दुरुपयोग नहीं हुआ है।

भारत में ऐसे कई औद्योगिक घराने हैं जिन्होंने अपनी पूरी संपत्ति को ट्रस्ट के माध्यम से समाज उत्थान हित दान में दिया है। प्राचीन भारत में यह कार्य राजा-महाराजाओं द्वारा किया जाता रहा है। सनातन हिन्दू संस्कृति के विभिन्न शास्त्रों में यह वर्णन मिलता है कि ईश्वर ने जिसको सम्पन्न बनाया है, उसे समाज में वंचित वर्ग की भलाई के लिए सहयोग करना चाहिए।

भारत में निर्धन परिवारों को गरीबी रेखा से ऊपर लाने में समाज में सम्पन्न वर्ग द्वारा किए जाने वाले दान आदि की राशि से भी बहुत सहायता मिलती है। निगमित सामाजिक दायित्व (सी. एस. आर.) योजना के अंतर्गत चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं का सीधा लाभ भी समाज के गरीब वर्ग को ही मिलता है। अतः विश्व में संभवतः भारत ही एक ऐसा देश है जहां सरकार एवं समाज मिलकर निर्धन वर्ग की भलाई हेतु कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। यह विश्व को एक सन्देश है कि हिन्दू संस्कृति का विस्तार यदि वैश्विक स्तर पर होता है तो, इससे पूरे विश्व का कल्याण हो सकता है। वैश्विक स्तर पर निर्धनता के उन्मूलन के लिए भारतीय संस्कृति में निहित दान परम्परा विशिष्ट भूमिका का निर्वहन कर सकती है। ■

ISSN No. 2581-3528

आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर भारत की अंतरिक्ष में लंबी छलांग

मृत्युंजय दीक्षित
लेखक एवं स्तम्भकार

भारत के वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि संकल्प और दृष्टि के, साहसिक सपने साकार किए जा सकते हैं। इसरो ने वर्ष 2014 में प्रथम प्रयास में, सबसे कम लागत में मंगलयान मिशन को सफलतापूर्वक लांच किया। चंद्रयान-1 ने चन्द्रमा पर जल अणुओं की खोज की और वर्ष 2023 में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की जिसे पूरे विश्व ने टीवी पर लाइव देखा, आज लैंडिंग का यह बिंदु शिव शक्ति बिंदु के नाम से जाना जाता है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के नेतृत्व में अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत लगातार प्रगति के पथ पर बढ़ते हुए आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की ऐतिहासिक यात्रा 1962 में डा. विक्रम साराभाई के नेतृत्व में गठित भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष अनुसंधान समिति की स्थापना के साथ आरम्भ हुई। भारत के पहले साउंडिंग रॉकेट का प्रक्षेपण 1963 में केरल के थुंबा से हुआ था। इसरो के वर्तमान स्वरूप की स्थापना 15 अगस्त 1969 को हुई और इसरो का प्रथम उपग्रह आर्यभट्ट 1975 में यूएसएसआर से प्रक्षेपित किया गया। इसरो का प्रथम स्वदेशी उपग्रह एसएलवी–3 था जिसने 1980 में रोहिणी उपग्रह को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित किया। इसरो अपनी सफलता की यात्रा में अब तक 99 लांचिंग कर चुका है और इसने कई कीर्तिमान स्थापित किये हैं। योजनानुसार आगे बढ़ते हुए इसरो वर्ष 2025 तथा आगे आने वाले वर्ष में वह करिश्मा करने जा रहा है जिससे पूरा भारत एक बार फिर गर्व का अनुभव करेगा।

आरंभिक दिनों में धनी तथा वैज्ञानिक दृष्टि से आगे माने जाने वाले देशों द्वारा उपहास बनाए जाने, साईकिल व बैल गाड़ी पर लादकर रॉकेट के पुर्जे ले जाने, गरीबी के कारण अंतरिक्ष अनुसंधान पर खर्च को लेकर सवाल उठने के बाद भी भारतीय वैज्ञानिक कभी निराश नहीं हुए, वह कठिन दौर अब बहुत पीछे छूट चुका है, आज चन्द्रमा पर शिव शक्ति बिंदु के रूप में तिरंगा लहरा रहा है। इसरो के वैज्ञानिकों की प्रतिबद्धता और दृढ़ता कभी डिगी नहीं। नवाचार, परिश्रम और राष्ट्र सेवा के प्रति समर्पण से उन्होंने संघर्षों को सफलता की गाथा में बदल दिया।

भारत के वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि संकल्प और दृष्टि के, साहसिक सपने साकार किए जा सकते हैं। इसरो ने वर्ष 2014 में प्रथम प्रयास में, सबसे कम लागत में मंगलयान मिशन को सफलतापूर्वक लांच किया। चंद्रयान–1 ने चन्द्रमा पर जल अणुओं की खोज की और वर्ष 2023 में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंडिंग की जिसे पूरे विश्व ने टीवी पर लाइव देखा, आज लैंडिंग का यह बिंदु शिव शक्ति बिंदु के नाम से जाना जाता है।

इसरो ने 2024 के आरम्भ में सूर्य का अध्ययन करने के लिए आदित्य एल–1 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया तथा अंत में स्पैडेक्स मिशन के साथ श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से 44.5 मीटर लंबे ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी–सी 60) रॉकेट ने दो छोटे अंतरिक्ष यानों चेजर और टारगेट के साथ सफलतापूर्वक छोड़ा है। अब चेजर और टारगेट को 475 किलोमीटर की वृत्ताकार कक्षा

ISSN No. 2581-3528

में स्थापित कर दिया गया है। वैज्ञानिकों के अनुसार आगामी 7 जनवरी तक डॉकिंग प्रक्रिया पूर्ण हो जायेगी। स्पैडेक्स मिशन के साथ ही अब भारत डॉकिंग और अनडॉकिंग क्षमता प्रदर्शित करने वाला चौथा देश बनेगा। इस समय दुनिया के मात्र तीन देश अमेरिका, चीन और रूस के पास अंतरिक्ष यान को अंतरिक्ष में डॉक करने की क्षमता है। अंतरिक्ष यान से दूसरे अंतरिक्ष यान के जुड़ने को डॉकिंग और अंतरिक्ष यानों के अलग होने को अनडॉकिंग कहते हैं।

स्पैडेक्स मिशन भारत के लिए कई दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भविष्य के मानव अंतरिक्ष उड़ान के लिए महत्वपूर्ण तकनीक है। यह अतंरिक्ष में डॉकिंग के लिए बहुत ही किफायती प्रौद्योगिकी मिशन है। इसकी सफलता चंद्रमा पर मानव को भेजने व नमूने लाने के लिए जरूरी है। इसकी सफलता से भविष्य में भारत के वैज्ञानिक भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण और संचालन में भी आत्मनिर्भर होंगे क्योकि इसरो की 2035 तक अपना अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की योजना है। वहीं एक से अधिक रॉकेट लांच करने के लिए भी इस तकनीक की जरूरत है।

यह अंतरिक्षयान दो वर्षों तक पृथ्वी की परिक्रमा करेंगे। दोनों अंतरिक्ष यानों का वजन 220 किग्रा है। इस मिशन की सफलता से अंतरिक्ष कचरे की समस्या से निपटने में भी सफलता मिलेगी। पीओईएम इसरो का प्रायोगिक मिशन है इसके तहत कक्षीय प्लेटफार्म के रूप में पीएस 4 चरण का उपयोग करके कक्षा में वैज्ञानिक प्रयोग किया जाता है। पीएसलवी – चार चरणों वाला रॉकेट है इसके पहले तीन चरण प्रयोग होने के बाद समुद्र में गिर जाते हैं और अंतिम चरण उपग्रह को कक्षा में प्रक्षेपित करने के बाद अतंरिक्ष में कबाड़ बन जाता है। पीओईएम के तहत रॉकेट के इसी चौथे चरण का इस्तेमाल वैज्ञानिक प्रयोग करने में किया जायेगा।

वर्ष २०२५ में और कमाल करेगा इसरो – अंतरिक्ष क्षेत्र के विशेषज्ञों का मत है कि अभी तक भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो ने जो कुछ किया है वह तो ट्रेलर मात्र है आगामी कुछ वर्षों में इसरो के वैज्ञानिक और भी

कमाल करने की तैयारी कर रहे हैं और जिसके बाद भारत अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में पूरी तरह आत्मनिर्भर हो जायेगा। इस वर्ष इसरो की 36 उपग्रहों के प्रक्षेपण करने की योजना तो है ही साथ ही यह रूस और अमेरिका के साथ मिलकर अंतरिक्ष यात्री भेजने की तैयारी भी है। लो अर्थ ऑर्बिट में कुल 36 सेटेलाइट लांच होने जा रहे हैं। जो देश के कई सेक्टरों को लाभान्वित करेंगे। इससे कृषि, संचार और परिवहन जैसे क्षेत्रों को सुविधा मिलेगी और आम जनजीवन में सुधार होगा।

नये वर्ष में अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की तैयारियों में प्रमुख है कि इसरो ने निजी कंपनियों को प्रक्षेपण यान के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरित करने का निर्णय लिया है। इससे भारत में प्रक्षेपण यान का एक बड़ा बाजार तैयार होने जा रहा है। इसमें एएसएलवी एक नई शक्ति के रूप में स्थापित होगा। चंद्रयान–3 और आदित्य एल–1 के बाद स्पैडेक्स मिशन की सफलता पर केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा है कि भारत अब स्वदेशी डॉकिंग सिस्टम विकसित करने वाला विश्व का चौथा देश बन गया है। इसरो का यह मिशन अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक नये युग का आरम्भ है। स्पैडेक्स मिशन छोटे अंतरिक्ष यानों के साथ पहला ऐसा मिशन है। हम इसे बड़े अंतरिक्ष यानों के साथ आगे बढ़ायेंगे। मंत्री का कहना है कि नये साल में इसरो नासा सिंथेटिक एपर्चर रडार उपग्रह लांच करने के लिए तैयार है। भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन गगनयान के तहत व्योममित्र रोबोट को भी इस वर्ष लांच करने की तैयारी है। मार्च से पहले गगनयान मिशन के लिए क्रू एस्केप सिस्टम के परीक्षण की भी योजना है। 2025 के मध्य या 2026 के प्रारम्भ में ही मानव अंतरिक्ष उड़ान–गगनयान को लांच किया जायेगा। गगनयान मिशन के तहत अंतरिक्ष यात्रियों को 400 किमी कक्षा में भेजा जायेगा और उन्हें भारतीय समुद्री क्षेत्र में उतारा जायेगा। जनवरी 2025 में ही जीएसएलवी मिशन के साथ 100वीं लांचिंग भी होने जा रही है। यह गतिविधियां शुभ संकेत दे रही हैं कि आने वाला समय अंतरिक्ष में भारत के सूर्योदय का है। ■

इस वर्ष इसरो की 36 उपग्रहों के प्रक्षेपण करने की योजना तो है ही साथ ही यह रुस और अमेरिका के साथ मिलकर अंतरिक्ष यात्री भेजने की तैयारी भी है। लो अर्थ ऑर्बिट में कुल 36 सेटेलाइट लांच होने जा रहे हैं। जो देश के कई सेक्टरों को लाभान्वित करेंगे। इससे कृषि, संचार और परिवहन जैसे क्षेत्रों को सुविधा मिलेगी और आम जनजीवन में सुधार होगा।

अनोखा कुटुंब : महेन्द्र रावल जी का परिवार

डॉ. शिवा शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर अंग्रेजी विभाग
झम्मन लाल पी.जी. कॉलेज हसनपुर, अमरोहा

परिवार समाज की मूल इकाई है, हमारी सामाजिक संरचना की रीढ़ है। यह एक संघ के साथ-साथ एक संस्था दोनों का प्रतिनिधित्व करता है। हिन्दू परिवार का केंद्र स्त्री और धर्म है। हिन्दू सनातन धर्म संयुक्त परिवार को श्रेष्ठ शिक्षण संस्थान मानता है। धर्मशास्त्र कहते हैं कि जो घर संयुक्त परिवार का पोषक नहीं है उसकी शांति और समृद्धि सिर्फ एक भ्रम है। घर संयुक्त परिवार से ही होता है। आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में संयुक्त परिवार तेजी से टूट रहे हैं और उनकी जगह एकल परिवार लेते जा रहे हैं, लेकिन बदलती जीवनशैली और प्रतिस्पर्धा के दौर में तनाव तथा अन्य मानसिक समस्याओं से निपटने में अपनों का साथ अहम भूमिका निभा सकता है। संयुक्त परिवार में जहां बच्चों का लालन-पालन और मानसिक विकास अच्छे से होता है वहीं वृद्धजन का समय भी शांति और खुशी से गुजरता है। बच्चे संयुक्त परिवार में दादा-दादी, काका-काकी, बुआ आदि के प्यार की छांव में खेलते-कूदते, संस्कारों को सीखते हुए बड़े होते हैं। संयुक्त परिवार संस्कारों की जननी है।

सनातन धर्म, या जीवन का शाश्वत तरीका, एक ऐसा शब्द है जो हिन्दू धर्म की विविध और बहुलवादी परंपराओं को समाहित करता है। यह उन कालातीत सिद्धांतों और प्रथाओं पर आधारित है जो हिन्दू धर्म के अनुयायियों को उनके व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक कार्यों में मार्गदर्शन करते हैं। सनातन धर्म के प्रमुख पहलुओं में से एक संयुक्त परिवार प्रणाली की अवधारणा है, जहाँ कई पीढ़ियाँ एक साथ एक ही छत के नीचे रहती हैं।

ऐसा ही सयुंक्त परिवार की मिसाल है महेन्द्र रावल जी का परिवार जिनके ऐतिहासिक अभिलेख के अनुसार राजा जयसिंह ने 1496 से 1588 तक जैसलमेर पर शासन किया। उसके 9 पुत्र थे। उनके नाम 1. करण सिंह, 2. कर्म सिंह, 3.महीराबाद, 4.राजू, 5.मंडलीक, 6.नरसिंह दास, 7.जय सिंह देव, 8.रावल राम और 9. त्रिलोक सिंह उर्फ भैरू सिंह। राजा जैत सिंह के दूसरे पुत्र कर्म सिंह 15 जनवरी 1528 को गंगा

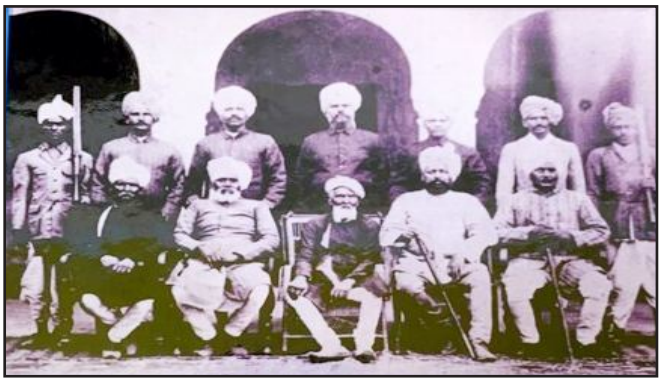

स्नान के लिए जैसलमेर से पश्चिम उत्तर प्रदेश की ओर चले गए। उनके दो छोटे भाई रावल राम और त्रिलोक सिंह उर्फ भैरू सिंह उर्फ बरिल सिंह उनके साथ गए रास्ते में उनकी आचार गढ़ के राजा लूथ वर्मा से लड़ाई हुई इस लड़ाई में राजा लूथ वर्मा हार गए। हालांकि करम सिंह और रावल राम शहीद हो गए।

आमका का रावल परिवार धूम मानिकपुर गांव से संबंधित था जो इसके उत्तर में लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर है। रावल परिवार के पूर्वजों में से एक ठाकुर रणजीत सिंह धूम मानिकपुर के निवासी थे। वह वेरी विशाल सिंह के प्रत्यक्ष वंशज थे। उनके पांच बेटे थे। उनके नाम थे – 1. ठाकुर मोहर सिंह, 2. ठाकुर झूठ सिंह, 3. ठाकुर सिपाही सिंह, 4. ठाकुर रामदयालु सिंह, और 5. ठाकुर धर्म सिंह। ठाकुर रणजीत सिंह के सबसे बड़े बेटे ठाकुर मोहर सिंह ने 1818 में इस गांव की स्थापना की। इस गांव की सारी जमीन रावल परिवार की थी। अब कुछ वंशज अपनी जमीन बेच कर दूसरी जगह पर चले गए हैं।

ठाकुर मोहर सिंह के तीन बेटे थे– ठाकुर रामजस सिंह, ठाकुर मोती राम सिंह और ठाकुर मुखराम सिंह। आमका का रावल परिवार इन तीनों पूर्वजों की संतान है। 2018 में आमका गांव में इस परिवार ने अपने अस्तित्व के 200 साल पूरे कर लिए हैं।

उल्लेखनीय है कि पिछले 500 वर्षों में बेरीसाल जी के वंशज पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई गांवों और कश्मीर तक फैल गए हैं। रावल राजपूत के प्रमुख निवास वाले कुछ प्रमुख गांव हैं। धूम मानिकपुर, गोरी, बछेड़ा, आमका, दादरी, जैतपुर, बाडपुरा, हाजीपुर, समुद्दीनपुर बड़ा, दीपपुर, भमेला, रामखेड़ी, छुटमलपुर, रामपुर (मुजफ्फरनगर), परमावली (खतौली)। बेहतर जीवन स्तर, सुरक्षा, चिकित्सा और अन्य सुविधाओं के लिए अब रावल परिवार के कई सदस्य गांव से गाजियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गुरुग्राम जैसे अन्य स्थानों पर भी चले गए हैं। कुछ तो इंग्लैंड, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसी जगह पर भी चले गए हैं। आमका के रावल परिवार के सदस्यों को पीढ़ीवार समूहीकृत किया गया है। पहली पीढ़ी (ठाकुर मोहर सिंह) से लेकर सातवीं पीढ़ी के श्री सत्यम पुत्र श्री माधव सिंह तक परिवार में कुल 146 सदस्य हैं।

पिछले दो सौ सालों में परिवार में 146 सदस्य (जीवित और मृत दोनों) हुए हैं। एक परिवार की सात पीढ़ियों की तस्वीरों के सबसे बड़े संग्रह के लिए, रावल फैमिली ऑफ आमका का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया है।

■

जन्मदिवस विशेष - 12 जनवरी

विश्वविजेता स्वामी विवेकानंद

यदि कोई यह पूछे कि वह कौन युवा संन्यासी था, जिसने विश्व पटल पर भारत और हिन्दू धर्म की कीर्ति पताका फहराई? तो सबके मुख से निःसंदेह स्वामी विवेकानन्द का नाम ही निकलेगा। विवेकानन्द का बचपन का नाम नरेन्द्र था। उनका जन्म कोलकाता में 12 जनवरी, 1863 को हुआ था। बचपन से ही वे बहुत शरारती, साहसी और प्रतिभावान थे। पूजा-पाठ और ध्यान में उनका मन बहुत लगता था। नरेन्द्र के पिता उन्हें अपनी तरह प्रसिद्ध वकील बनाना चाहते थे पर वे धर्म सम्बन्धी अपनी जिज्ञासाओं के लिए इधर-उधर भटकते रहते थे। किसी ने उन्हें दक्षिणेश्वर के पुजारी श्री रामकृष्ण परमहंस के बारे में बताया कि उन पर माँ भगवती की विशेष कृपा है। यह सुनकर नरेन्द्र उनके पास जा पहुँचे।

वहाँ पहुँचते ही उन्हें लगा, जैसे उनके मन-मस्तिष्क में विद्युत का संचार हो गया है। यही स्थिति रामकृष्ण जी की भी थी उनके आग्रह पर नरेन्द्र ने कुछ भजन सुनाये। भजन सुनते ही परमहंस जी को समाधि लग गयी। वे रोते हुए बोले, नरेन्द्र मैं कितने दिनों से तुम्हारी प्रतीक्षा में था। तुमने आने में इतनी देर क्यों लगायी? धीरे-धीरे दोनों में प्रेम बढ़ता गया। वहाँ नरेन्द्र की सभी जिज्ञासाओं का समाधान हुआ।

उन्होंने परमहंस जी से पूछा - क्या आपने भगवान को देखा है ? उन्होंने उत्तर दिया - हाँ, केवल देखा ही नहीं उनसे बात भी की है। तुम चाहो तो तुम्हारी बात भी करा सकता हूँ। यह कहकर उन्होंने नरेन्द्र को स्पर्श किया। इतने से ही नरेन्द्र को भाव समाधि लग गयी। अपनी सुध-बुध खोकर वे मानो दूसरे लोक में पहुँच गये।

अब नरेन्द्र का अधिकांश समय दक्षिणेश्वर में बीतने लगा। आगे चलकर उन्होंने संन्यास ले लिया और उनका नाम विवेकानन्द हो गया। जब रामकृष्ण जी को लगा कि उनका अन्त समय पास आ गया है, तो उन्होंने विवेकानन्द को स्पर्श कर अपनी सारी आध्यात्मिक शक्तियाँ उन्हें दे दीं। अब विवेकानन्द ने देश-भ्रमण प्रारम्भ किया और वेदान्त के बारे में लोगों को जाग्रत करने लगे।

उन्होंने देखा कि ईसाई पादरी निर्धन ग्रामीणों के मन में हिन्दू धर्म के बारे में तरह-तरह की भ्रान्तियाँ फैलाते हैं। उन्होंने अनेक स्थानों पर इन धूर्त मिशनरियों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी पर कोई सामने नहीं आया। इन्हीं दिनों उन्हें शिकागो में होने जा रहे विश्व धर्म सम्मेलन का पता लगा। उनके कुछ शुभचिन्तकों ने उनके वहां जाने हेतु धन का प्रबन्ध कर दिया। स्वामी जी भी ईसाइयों के गढ़ में ही उन्हें ललकारना चाहते थे। अतः वे शिकागो जा पहुँचे।

शिकागो का सम्मेलन वस्तुतः दुनिया में ईसाइयत की जयकार गुँजाने का षड्यन्त्र मात्र था। इसलिए विवेकानन्द को बोलने के लिए सबसे अन्त में कुछ मिनट का ही समय मिला पर उन्होंने अपने पहले ही वाक्य 'अमरीकावासी भाइयों और बहिनों' कहकर सबका दिल जीत लिया। तालियों की गड़गड़ाहट से सभागार गूँज उठा। यह 11 सितम्बर, 1893 का दिन था। उनका भाषण सुनकर लोगों के भ्रम दूर हुए। इसके बाद वे अनेक देशों के प्रवास पर गये। इस प्रकार उन्होंने सर्वत्र हिन्दू धर्म की विजय पताका लहरा दी।

भारत लौटकर उन्होंने अपने गुरु की स्मृति में श्री रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी विश्व भर में वेदान्त के प्रचार में लगा है। जब उन्हें लगा कि उनके जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया है, तो उन्होंने 4 जुलाई, 1902 को महासमाधि लेकर स्वयं को परमात्मा में लीन कर लिया।

प्रेरणा विमर्श 2020 के अवसर पर केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक सिने विमर्श और भारतीय विरासत का विमोचन करते
लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिडला जी, गोवा की पूर्व राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा जी,
उत्तर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक अन्त्योदय की ओर का विमोचन करते सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबले जी,
उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी, वरिष्ठ लेखिका अद्वैता काला जी व अन्य अतिथिगण

केशव संवाद पत्रिका के विशेषांक पत्रकारिता के अग्रदूत का विमोचन करते उत्तर प्रदेश के मा.राज्यपाल श्री राम नाईक जी,
पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र संघचालक श्री सूर्यप्रकाश टोंक जी, माखनलाल चतुर्वेदी विवि. के पूर्व कुलपति
श्री जगदीश उपासने जी व अन्य अतिथिगण